MISSION EDUCATION
OUR MOTTO

व्याकरण

क्षितिज

भाग–5

समस्त पाठों का संपूर्ण हल

Horizon PRESS
GLOBAL EDUCATION SOLUTIONS
Publishers, Printers and Exporters of High Quality Books

विषय सूची

1.	भाषा और व्याकरण	3
2.	वर्ण विचार	4
3.	शब्द विचार	5
4.	संज्ञा	8
5.	लिंग	10
6.	वचन	12
7.	कारक	13
8.	सर्वनाम	15
9.	विशेषण	17
10.	क्रिया एवं काल	19
11.	अव्यय या अविकारी शब्द	22
12.	संबंधबोधक अव्यय	24
13.	समुच्चयबोधक अव्यय	26
14.	विस्मयादिबोधक अव्यय	27
15.	संधि	29
16.	समास	32
17.	उपसर्ग	34
18.	प्रत्यय	36
19.	शब्द भंडार	37
20.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	40
21.	अलंकार	42
22.	अपठित	43
23.	अनुच्छेद लेखन	45
24.	पत्र लेखन	48
25.	निबंध लेखन	50

Published by :

Horizon PRESS

GLOBAL EDUCATION SOLUTIONS

Publishers, Printers and Exporters of High Quality Books

e-mail : horizonpress.suggestion@gmail.com

© Publisher

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior written permission of the publisher.

1. भाषा और व्याकरण

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. भाषा से क्या अभिप्राय है?

उत्तर – भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपने मन के भावों या विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करता है तथा सुनकर एवं पढ़कर दूसरों की बात समझ सकता है।

प्रश्न 2. भाषा का प्रयोग किस-किस रूप में किया जाता है?

उत्तर – भाषा का प्रयोग लिखकर, बोलकर तथा संकेत के द्वारा किया जाता है।

इस प्रकार भाषा के तीन रूप हैं–

1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा 3. सांकेतिक भाषा

प्रश्न 3. मौखिक भाषा और लिखित भाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – मौखिक भाषा और लिखित भाषा में अंतर–

भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति बोलकर विचार प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति सुनकर उसे समझता है, मौखिक भाषा कहलाती है; जैसे– नेताजी ने हमारे शहर में भाषण दिया।

भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति लिखकर अपने विचार प्रकट करता है तथा दूसरा व्यक्ति पढ़कर उसकी बात समझता है, लिखित भाषा कहलाती है; जैसे– पत्र, लेख, पत्रिका आदि।

प्रश्न 4. हिंदी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?

उत्तर – हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

प्रश्न 5. व्याकरण किसे कहते हैं? व्याकरण के कितने विभाग होते हैं?

उत्तर – व्याकरण वह ज्ञान है जिसमें हम भाषा को शुद्ध रूप में बोलना, लिखना व पढ़ना सीखते हैं।

व्याकरण के तीन विभाग होते हैं–

1. वर्ण विचार 2. शब्द विचार 3. वाक्य विचार

प्रश्न 6. बोली किसे कहते हैं?

उत्तर– भाषा का अल्पविकसित रूप बोली कहलाता है। इसका प्रयोग सीमित क्षेत्र में किया जाता है। इसमें साहित्य की रचना नहीं होती।

या

अलग-अलग क्षेत्रों में किसी भाषा के अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं। भाषा के इसी स्थानीय रूप को बोली कहते हैं।

प्रश्न 7. लिपि से क्या अभिप्राय है? रोमन लिपि किस भाषा की लिपि है?

उत्तर - हम जब भी किसी शब्द या वाक्य को बोलते हैं, तो हमारे मुख से ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनि संकेतों को लिखने के लिए विशेष चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। वे चिह्न जिनके द्वारा कोई भाषा लिखित रूप में प्रकट की जाती है उसे भाषा की लिपि कहते हैं।

या

मुख से निकली ध्वनियों को लिखने की विधि या चिह्न को लिपि कहते हैं।

रोमन लिपि अंग्रेजी भाषा की लिपि है।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. विश्व के विभिन्न देशों के लोग अपनी-अपनी **भाषा** बोलते हैं।
2. **हिंदी** हमारी राजभाषा है।
3. जब हम संकेतों के द्वारा अपने मन के भाव एवं विचार प्रकट करते हैं, तो वह **सांकेतिक भाषा** कहलाती है।
4. व्याकरण किसी भी भाषा को शुद्ध रूप में **बोलना, लिखना** और **पढ़ना** सिखाता है।
5. देश के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा को **क्षेत्रीय भाषा** कहते हैं।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए–

1. इस दूध में कौन पड़ा है?	**इस दूध में क्या पड़ा है?**
2. चार राजा दशरथ के पुत्र थे।	**राजा दशरथ के चार पुत्र थे।**
3. मेरे पिता जी आ रहे हैं।	**पिताजी आ रहे हैं।**
4. मैं पुस्तक पढ़ा।	**मैनें पुस्तक पढ़ी।**
5. एक फूलों की माला थी।	**फूलों की एक माला थी।**

2. वर्ण विचार

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. वर्ण किसे कहते हैं? वर्ण कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर - वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है, इसके ओर अधिक टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं। जैसे - क, ख, ग, ए, उ, ऊ, आदि।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं–

1. स्वर 2. व्यंजन

प्रश्न 2. स्वर किसे कहते हैं? इसके भेदों का वर्णन कीजिए।

उत्तर - वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, स्वर कहलाते हैं। ये

संख्या में ग्यारह हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के निम्नलिखित दो भेद होते हैं–

1. **ह्रस्व स्वर–** जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें 'ह्रस्व स्वर' कहते हैं। ह्रस्व स्वर चार हैं– अ, इ, उ और ऋ।
2. **दीर्घ स्वर–** जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा दुगुना समय लगता है, उन्हें 'दीर्घ स्वर' कहते हैं। दीर्घ स्वर सात हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ।

प्रश्न 3. व्यंजन से आप क्या समझते हैं? अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजनों में क्या अंतर है?

उत्तर - व्यंजन उन वर्णों (अक्षरों) को कहते हैं जिनको बोलने के लिए अन्य स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। हिंदी में 33 व्यंजन होते हैं।

अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजनों में अंतर–

जिन वर्णों के उच्चारण में वायु की मात्रा कम होती है, वे 'अल्पप्राण व्यंजन' कहलाते हैं; जैसे– क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ, ट, ड, ण, त्, द्, न्, प, ब, म् तथा य्, र्, ल, व्।

जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु की मात्रा अधिक होती है, वे 'महाप्राण व्यंजन' कहलाते हैं; जैसे– ख, घ्, छ, झ्, ठ्, ढ़, थ्, ध्, फ्, भ्, ढ्, श्, ष्, स्, ह।

प्रश्न 4. संयुक्त वर्ण किसे कहते हैं?

उत्तर - जब एक से अधिक वर्ण परस्पर मिल जाते हैं, तो वे 'संयुक्त वर्ण' कहलाते हैं; जैसे - स्नान, प्यासा, न्याय, राष्ट्र, कर्म आदि।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता से हो सकता है, उन्हें **स्वर** कहते हैं।
2. जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा दुगुना समय लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं।
3. जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें **व्यंजन** कहते हैं।
4. जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास वायु की मात्रा कम होती है, उन्हें **अल्पप्राण** कहते हैं।
5. जब एक से अधिक वर्ण परस्पर मिल जाते हैं, तो वे **संयुक्त वर्ण** कहलाते हैं।

3. शब्द विचार

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर - जिस प्रकार हमारे जीवन के लिए वायु आवश्यक है, उसी प्रकार भाषा के लिए शब्द आवश्यक हैं। शब्दों के बिना भाषा का अस्तित्व ही नहीं होगा।

इस प्रकार, "एक से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।" जैसे- राम, सोहन, चिड़िया, शिकारी आदि।

प्रश्न 2. रचना के आधार पर शब्द के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर - रचना के आधार पर शब्द के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

1. रूढ़ शब्द– जिन शब्दों के सार्थक खंड नहीं किए जा सकते, बल्कि वे शब्द परंपरा से किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त हो रहे हों, उन्हें 'रूढ़ शब्द' कहते हैं।

उदाहरण– तोता, कुर्सी आदि।

2. यौगिक शब्द– वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं, जिनका अतिरिक्त अर्थ भी निकलता हो। उन्हें 'यौगिक शब्द' कहते हैं।

उदाहरण– बल + वान = बलवान

सम + तल = समतल

3. योगरूढ़ शब्द– ऐसे यौगिक शब्द जो किसी विशेष अर्थ में प्रयोग होने लगते हैं, वे शब्द 'योगरूढ़ शब्द' कहलाते हैं।

उदाहरण– कलानिधि = कला + निधि (चंद्रमा)

दशानन = दश + आनन (रावण)

प्रश्न 3. तत्सम और तद्भव शब्दों में क्या अंतर है?

उत्तर - तत्सम और तद्भव शब्दों में अंतर–

वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में बिना किसी बदलाव के लिए गए हैं, 'तत्सम शब्द' कहलाते हैं; जैसे– क्षेत्र, कार्य, मृत्यु आदि।

जो शब्द संस्कृत भाषा से थोड़े बदलाव के साथ हिंदी में आए हैं, वे 'तद्भव शब्द' कहलाते हैं; जैसे– अंधेरा, आग, मोर, अचरज आदि।

प्रश्न 4. देशज तथा विदेशी शब्दों से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - **देशज शब्द–** देश +ज अर्थात् देश में जन्मा। जो शब्द देश के विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित आम बोलचाल की भाषा से हिंदी में आ गए हैं, वे 'देशज शब्द' कहलाते हैं; जैसे– खिड़की, धोती, लोटा, पेटी, बाबा, चुन्नी आदि।

विदेशी शब्द– जो शब्द विदेशियों के संपर्क में आने पर विदेशी भाषा से हिंदी में आए, वे शब्द 'विदेशी शब्द' कहलाते हैं; जैसे– पेन, पेंसिल, स्टेशन, कार, डाक्टर, कीमत, मतलब, टेलीफोन आदि।

प्रश्न 5. विकारी तथा अविकारी शब्द कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर - **विकारी शब्द–** विकार यानी परिवर्तन। वे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण विकार (परिवर्तन) आ जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं।

ये चार प्रकार के होते हैं–

1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया

उदाहरण– मेज, लड़का, मैं, वह आदि।

अविकारी शब्द– अ + विकारी यानी जिनमें परिवर्तन न हो। ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक, आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, अविकारी शब्द कहलाते हैं।

ये चार प्रकार के होते हैं–

1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक 3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक

उदाहरण– जल्दी, लगभग, ऊपर, यहाँ आदि।

(ख) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

शब्द	**तत्सम रूप**
जीभ	**जिह्वा**
आँसू	**अश्रु**
सोना	**स्वर्ण**
गाहक	**ग्राहक**
दही	**दधि**
कान	**कर्ण**
पीठ	**पृष्ठ**
ब्याह	**विवाह**
जेठ	**ज्येष्ठ**
माथा	**मस्तक**
कपूत	**कुपुत्र**
साँप	**सर्प**
अचरज	**आश्चर्य**
हाथ	**हस्त**

(ग) निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

शब्द	**तद्भव रूप**
गृह	**घर**
परीक्षा	**परीच्छा**
अग्नि	**आग**
नृत्य	**नाच**
रात्रि	**रात**
उच्च	**ऊँचा**
कूप	**कुआँ**
मुख	**मुँह**
उज्ज्वल	**साफ**
हर्ष	**खुशी**

एकत्र	**इकट्ठा**
दुग्ध	**दूध**
चूर्ण	**चूरन**
कर्म	**काम**
पत्र	**पत्ता**

(घ) निम्नलिखित शब्द समूहों में से रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ शब्द चुनकर उचित स्थान पर लिखिए–

श्वेताम्बर	कब	विद्यालय	वाचनालय	दूध	मत
घोड़ा	पीताम्बर	जलज	पाठशाला	भाई	चिड़ियाघर

रूढ़ **घोड़ा, कब, दूध, मत, भाई।**

यौगिक **विद्यालय, वाचनालय, चिड़ियाघर, पाठशाला।**

योगरूढ़ **जलज, श्वेताम्बर, पीताम्बर।**

4. संज्ञा

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. संज्ञा किसे कहते हैं? संज्ञा के कितने भेद होते हैं?

उत्तर – जिस शब्द के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण –

1. राष्ट्रपति भवन में श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल रहती हैं।
2. 'मैं और मेरा व्याकरण' हिंदी व्याकरण की पुस्तक है।
3. राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में स्थित है।
4. मेरा बचपन गाँव में बीता ।

श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल – व्यक्ति

पुस्तक – वस्तु

नई दिल्ली – स्थान

बचपन – भाव

संज्ञा के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा

कुछ विद्वान अंग्रेजी व्याकरण के आधार पर संज्ञा के निम्नलिखित दो अन्य भेद भी मानते हैं–

समूहवाचक और द्रव्यवाचक संज्ञा।

प्रश्न 2. व्यक्तिवाचक संज्ञा व जातिवाचक संज्ञा में अंतर बताइए।

उत्तर - व्यक्तिवाचक व जातिवाचक संज्ञा में अंतर–

संज्ञा के जिस भेद से किसी विशेष वस्तु, व्यक्ति, अथवा स्थान के नाम का बोध होता है, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे– अजय, अमिताभ, बाइबिल, कुरान, दिल्ली, पंजाब, महाभारत आदि।

संज्ञा के जिस भेद से किसी विशेष जाति अथवा वर्गों के व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों के नाम का बोध होता है, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे- बच्चा, जानवर, नदी, अध्यापक, बाजार, गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि।

प्रश्न 3. भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - **भाववाचक संज्ञा–** किसी भाव, गुण, अवस्था या दोष का बोध कराने वाले शब्द 'भाववाचक संज्ञा' कहलाते हैं; जैसे– थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी, आजादी, साहस, वीरता आदि।

उदाहरण– 1. लगातार कई घंटों तक खेलने से मुझे **थकान** हो गई।

2. दशहरी आमों में बहुत **मिठास** होती है।

3. करेले में **कड़वापन** होता है।

4. **बुढ़ापे** में इंसान बिल्कुल बच्चा बन जाता है।

5. **गरीबी** बहुत बड़ा अभिशाप है।

प्रश्न 4. समूहवाचक संज्ञा शब्दों से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - **समूहवाचक संज्ञा–** जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति के व्यक्तियों या वस्तुओं के समूहों का बोध होता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– समुदाय, कक्षा, संघ, सेना आदि।

प्रश्न 5. द्रव्यवाचक संज्ञा की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर - **द्रव्यवाचक संज्ञा**– जिन संज्ञा शब्दों से किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– दाल, सोना, चाँदी, पीतल, ताँबा, तेल, घी, आदि।

विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ द्रव्य तथा धातु हैं।

उदाहरण– 1. दो किलो **अरहर** की दाल चाहिए।

2. मेरी अंगूठी **सोने** की है।

3. ज्यादा **घी** खाने से मोटापा बढ़ता है।

4. **पीतल** के बर्तन बहुत महँगे होते हैं।

(ख) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

गुरु	**गुरुत्व**	दौड़ना	**दौड़**
मम	**ममत्व**	पीसना	**पिसाई**
दुष्ट	**दुष्टता**	माता	**मातृत्व**

कठिन	**कठिनता**	पुरुष	**पुरुषत्व**
गहरा	**गहराई**	नीच	**नीचता**

(ग) निम्नलिखित अनुच्छेद में से जातिवाचक व व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द छाँटिए–

जिस दिन गोवर्धन पूजा की जाती है उससे पहले दिन दीवाली मनाई जाती है। रात में सभी लक्ष्मी जी का पूजन करते हैं। बालक–बच्चे, नर–नारी सभी खील–बताशे व मिठाइयाँ खाते हैं। भगवान गणेश व लक्ष्मी जी का पूजन कर धन–संपत्ति माँगते हैं।

जातिवाचक संज्ञा	**व्यक्तिवाचक संज्ञा**
बालक–बच्चे	गोवर्धन
नर–नारी	दीवाली
भगवान	लक्ष्मी, गणेश

(घ) नीचे दिए गए वाक्यों में रंगीन शब्दों में संज्ञा का भेद बताइए–

1. इस **कक्षा** में आज कम विद्यार्थी आए हैं।	**समूहवाचक**
2. मैं तुमसे **मित्रता** करना चाहता हूँ।	**भाववाचक**
3. यह मूर्ति **पीतल** की बनी है।	**द्रव्यवाचक**
4. **श्रीकृष्ण** का जन्म मथुरा में हुआ था।	**व्यक्तिवाचक**
5. आज तीन **परिवारों** ने खाना नहीं बनाया है।	**समूहवाचक**

5. लिंग

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. लिंग किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर – शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति अथवा पुरुष जाति का बोध हो, उसे 'लिंग' कहते हैं।

उदाहरण–

1. माँ बाजार जा रही हैं। 2. पिताजी फोन सुन रहे हैं।
3. लड़की खेल रही है। 4. लड़का पढ़ रहा है।
5. पुजारिन पूजा कर रही है। 6. पुजारी पूजा कर रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में माँ, पिताजी, लड़की, लड़का, पुजारिन तथा पुजारी शब्दों में उनके लिंग और वचन के अनुसार रूप परिवर्तन हो रहा है।

प्रश्न 2. पुल्लिंग की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर - शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं; जैसे– बालक, मोर, मुरगा, राजा, पर्वत, पेड़ आदि।

प्रश्न 3. स्त्रीलिंग की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर - शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध हो, वह स्त्रीलिंग कहलाता है; जैसे– बालिका, मोरनी, लड़की, दादी, लुटिया आदि।

(ख) निम्नलिखित शब्दों को लिंग के अनुसार अलग-अलग छाँटकर लिखिए–

पुस्तक, फल, जंगल, आग, केला, परीक्षा, मोती, खुशी, आँख, सूर्य, सोमवार, पाकिस्तान, लौकी, दवा, पाप, साड़ी, अंग्रेजी, झूठ, गन्ना, चक्की।

पुल्लिंग– मोती, फल, जंगल, केला, सूर्य ,सोमवार, पाकिस्तान, पाप, झूठ, गन्ना।

स्त्रीलिंग– पुस्तक, आग, खुशी, लौकी, साड़ी, अंग्रेजी, चक्की, आँख, परीक्षा, दवा।

(ग) रंगीन शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य पुनः लिखिए–

1. राधिका की **बेटी** मेरठ में रहती है।	राधिका का **बेटा** मेरठ में रहता है।
2. रानी ने **दासी** को आदेश दिया।	रानी ने **दास** को आदेश दिया।
3. **अध्यापिका** पढ़ा रही है।	**अध्यापक** पढ़ा रहा है।
4. **पिता** ने **पुत्र** को डाँट लगाई।	**माता** ने **पुत्री** को डाँट लगाई।
5. **नौकर** आज नहीं आएगा।	**नौकरानी** आज नहीं आएगी।

(घ) निम्नलिखित गद्यांश में से संज्ञा शब्द छाँटिए और उनके भेद और लिंग बताइए–

पिताजी ने माताजी को बुलाया और बेटे को नहलाने के लिए कहा, माताजी उसे नहलाने लगीं तो बेटा रोने लगा, उसे देखकर बड़ी बेटी हँसने लगी। माताजी ने बड़े प्रेम से बेटे को चुप कराया तथा बेटी को डाँट दिया।

संज्ञा	**भेद**	**लिंग**
पिताजी	जातिवाचक	पुल्लिंग
माताजी	जातिवाचक	स्त्रीलिंग
बेटे	जातिवाचक	पुल्लिंग
बेटा	जातिवाचक	पुल्लिंग
बेटी	जातिवाचक	स्त्रीलिंग
प्रेम	भाववाचक	पुल्लिंग

6. वचन

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. वचन किसे कहते हैं? वचन के कितने भेद होते हैं?

उत्तर – शब्द के जिस रूप से यह बोध हो कि उसका प्रयोग एक के लिए हुआ अथवा अनेक के लिए , उसे वचन कहते हैं।

या

जिन संज्ञा शब्दों से एक या अधिक संख्या का बोध होता है, उन्हें वचन कहते हैं।

वचन के दो भेद होते हैं–

1. एकवचन 2. बहुवचन

प्रश्न 2. एकवचन से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण भी दीजिए ।

उत्तर – जो शब्द–रूप व्यक्ति,वस्तु आदि के 'एक' होने का बोध कराए, एकवचन कहलाते हैं।

उदाहरण– दरवाजा, केला, कपड़ा, चादर ,गमला, दवात, लड़का, पौधा आदि।

प्रश्न 3. बहुवचन से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर – जो शब्द–रूप व्यक्ति, वस्तु आदि के एक से अधिक होने का बोध कराए, बहुवचन कहलाते हैं।

उदाहरण– दरवाजे, केले, कपड़े, चादरें, गमले, दवातें, लड़के, पौधे आदि।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में परिवर्तित करके लिखिए–

1. मैं आपको नमस्कार करता हूँ।	**हम आपको नमस्कार करते हैं।**
2. इस कमरे में छात्र पढ़ रहा है।	**इस कमरे में छात्र पढ़ रहे हैं।**
3. गाय घास चर रही है।	**गायें घास चर रही हैं।**
4. भारत में छः ऋतु होती हैं।	**भारत में छः ऋतुएँ होती हैं।**
5. मेज पर गिलास रखा है।	**मेज पर गिलास रखे हैं।**

(ग) कोष्ठक से उचित शब्द छाँटकर रिक्त स्थान भरिए–

1. दस **बालक** विद्यालय गए।	(बालकों, बालक)
2. **दासी** रानी के पैर दबा रही थी।	(दासी, दासियाँ)
3. यह **सड़क** बिलकुल सीधी है।	(सड़क, सड़कें)
4. तुम्हारा **घोड़ा** घास नहीं खा रहा है।	(घोड़े, घोड़ा)
5. जतिन ने आलू के **पराँठे** खाए।	(पराँठा, पराँठे)

(घ) निम्नलिखित वाक्यों को एकवचन में परिवर्तित करके लिखिए–

1. गली में कुत्ते भौंक रहे थे।	**गली में कुत्ता भौंक रहा था।**
2. छात्राएँ पेड़ के नीचे पढ़ रही हैं।	**छात्रा पेड़ के नीचे पढ़ रही है।**
3. लताएँ फूलों से लद गई हैं।	**लता फूलों से लद गई है।**
4. आसमान में पतंगें उड़ रही थीं।	**आसमान में पतंग उड़ रही थी।**
5. लड़के मैदान में खेल रहे हैं।	**लड़का मैदान में खेल रहा है।**

7. कारक

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. कारक की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया तथा अन्य शब्दों से ज्ञात हो, उसे कारक कहते हैं।

उदाहरण– 1. राम **ने** रावण **को** मारा।

2. माँ ने बेटे **के लिए** ईश्वर से प्रार्थना की।

3. अंकित **के** दाँत **में** दर्द है।

4. दिव्या **का** भाई छत **पर** खेल रहा है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'ने ', 'को', 'के लिए', 'के', 'में', 'का' तथा 'पर' शब्द वाक्य के शब्दों का आपस में संबंध प्रकट कर रहे हैं। इन्हीं को 'कारक चिह्न' के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 2. कारक के कितने भेद होते हैं ? प्रत्येक का नाम लिखिए।

उत्तर - कारक के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं–

1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. संप्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

प्रश्न 3. करण व अपादान कारक में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - करण व अपादान कारक में अंतर–

करण का अर्थ है साधन। वाक्य में क्रिया को जिस साधन से सिद्ध किया जाता है, उसे करण कारक कहते हैं। इसके परसर्ग हैं– 'से द्वारा', 'के द्वारा' आदि।

उदाहरण– 1. यह सूचना मुझे आपके पत्र **से** मिली है।

2. भुगतान चेक **द्वारा** भी किया जा सकता है।

3. माली ने खुरपी **से** घास खोदी।

4. उसने पत्र **द्वारा** मुझे सूचित किया।

अपादान का अर्थ है पृथक्कता, अलगाव। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी

व्यक्ति या वस्तु के पृथक् या अलग होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसके चिह्न हैं– 'से', 'पृथक्कता'

उदाहरण– 1. अनीता ने डाली **से** फूल तोड़ लिया।
2. उसके हाथ **से** टोकरा गिर गया।
3. वह घर **से** निकला।
4. नरेश बस **से** उतरा।

प्रश्न 4. अधिकरण कारक की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर - अधिकरण का अर्थ है आधार या सहारा। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार, समय अथवा स्थान का बोध होता है, उसे 'अधिकरण कारक' कहते हैं। इसके परसर्ग 'में', 'पर' है।

उदाहरण– 1. केतली **में** चाय है।
2. पक्षी पेड़ **पर** बैठे हैं।
3. भूचाल से कुछ क्षणों में **विनाश** हो गया।
4. मेज **पर** गिलास है।
5. लड़कियाँ मैदान **में** बैठी हैं।

प्रश्न 5. विभक्ति चिह्न क्या होते हैं ? कारक के सभी विभक्ति चिह्न भी लिखिए।

उत्तर - कारकों को प्रकट करने के लिए संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के साथ जो चिह्न लगाए जाते हैं। उन्हें विभक्ति चिह्न कहते हैं।

कारकों के विभक्ति चिह्न निम्नलिखित हैं–

कारक	विभक्ति चिह्न
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से, के द्वारा, के साथ
संप्रदान	को, के लिए
अपादान	से, पृथक्कता
संबंध	का, के,की, ना
अधिकरण	में, पर
संबोधन	हे! अरे! आदि।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में रेखाकिंत शब्दों के कारक बताइए–

1. <u>वृक्ष</u> से पत्ता गिरा।	**अपादान कारक**
2. रेणु ने <u>आम</u> तोड़ा।	**कर्ता कारक**
3. यह <u>प्रकाश</u> की पुस्तक है।	**संबंध कारक**
4. <u>बच्चे</u> के लिए दूध लाओ।	**संप्रदान कारक**
5. <u>हे ईश्वर</u>! मेरी रक्षा करो।	**संबोधन कारक**
6. रिया <u>जयपुर</u> से आई है।	**अपादान कारक**
7. <u>छत</u> पर बिल्ली बैठी है।	**अधिकरण कारक**
8. <u>उसने</u> शांति के लिए पूजा-अर्चना की।	**कर्ता कारक**

8. सर्वनाम

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. सर्वनाम किसे कहते हैं? सर्वनाम के भेद लिखिए।

उत्तर - संज्ञा शब्दों के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

जैसे– मैं, हम, तू, तुम, वह , वे, आप, कौन, कुछ, क्या, हमारा, तुम्हारा आदि सर्वनाम हैं।

सर्वनाम के निम्नलिखित छः भेद होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

प्रश्न 2. पुरुषवाचक सर्वनाम की परिभाषा दीजिए। यह कितने प्रकार का होता है?

उत्तर - जो सर्वनाम किसी पुरुष या व्यक्ति का सूचक हो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

1. मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा।
2. तुम कहाँ से आए हो?
3. वे खेल रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मैं ', 'तुम' और 'वे ' पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के प्रकार–

1. उत्तम पुरुष
2. मध्यम पुरुष
3. अन्य पुरुष

प्रश्न 3. निश्चयवाचक व अनिश्चयवाचक सर्वनाम में क्या अंतर है?

उत्तर - निश्चयवाचक व अनिश्चयवाचक सर्वनाम में अंतर -

जो सर्वनाम निश्चयपूर्वक किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध कराएँ, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

1. यह, ये, वह, वे आदि सर्वनाम इसी वर्ग के हैं।
2. यह और वह किसी व्यक्ति का निश्चयपूर्वक बोध कराते हैं।
3. यह का प्रयोग निकटवर्ती संज्ञा के लिए तथा 'वह' का प्रयोग दूरवर्ती संज्ञा के लिए किया जाता है ।

जो सर्वनाम किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर ऐसे संकेत करें कि उनकी स्थिति अनिश्चित या अस्पष्ट रहे, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

1. कोई, किसी, कुछ आदि सर्वनाम इसी वर्ग के हैं।
2. यहाँ, कोई और कुछ व्यक्ति और वस्तु का अनिश्चित बोध कराने वाले अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।
3. कोई मनुष्य के लिए तथा कुछ अन्य संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होता है।

प्रश्न 4. संबंधवाचक सर्वनाम से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - जो सर्वनाम एक-दूसरे के साथ संबंध का बोध कराते हैं और प्रधान वाक्य को आश्रित वाक्य से संबद्ध रखते हैं वे 'संबंधवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं; जैसे–

1. **जैसा** करोगे, **वैसा** भरोगे।
2. **जिसकी** लाठी, **उसकी** भैंस।
3. **जहाँ** चाह, **वहाँ** राह।
4. **जैसा** बोओगे, **वैसा** काटोगे।
5. **जो** सच था, **सो** हुआ।

प्रश्न 5. निजवाचक सर्वनाम की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर - जो सर्वनाम शब्द कर्ता के स्वयं के लिए प्रयोग होते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण– 1. पुनीत इसके लिए **खुद ही** जिम्मेदार है।

2. अपना कार्य **स्वयं** करो।
3. वह **अपने आप** से दुखी है।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. जो सर्वनाम शब्द एक-दूसरे के साथ संबंध का बोध कराते हैं,उन्हें **संबंधवाचक** सर्वनाम कहते हैं।
2. जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु के लिए किया जाता है, उन्हें **निश्चयवाचक** सर्वनाम कहते हैं।
3. बोलने वाला व्यक्ति अपने लिए जिन शब्दों का व्यवहार करता है,उन्हें **उत्तम पुरुष** सर्वनाम कहते हैं।
4. जो सर्वनाम शब्द कर्ता के स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें **निजवाचक** सर्वनाम कहते हैं।
5. जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्रश्न का बोध होता है, उन्हें **प्रश्नवाचक** सर्वनाम कहते हैं।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों से सर्वनाम छाँटिए और उनके भेद लिखिए–

1. यह काम **किसने** किया है?	**प्रश्नवाचक सर्वनाम**
2. **इन्होंने** स्कूल का काम नहीं किया।	**निश्चयवाचक सर्वनाम**
3. **जो** मेहनत करते हैं, **वे** सफल होते हैं।	**संबंधवाचक सर्वनाम**
4. **मैं** कल इलाहाबाद चला जाऊँगा।	**पुरुषवाचक सर्वनाम**
5. **कोई** सड़क पर जा रहा था।	**अनिश्चयवाचक सर्वनाम**

9. विशेषण

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. विशेषण किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर - संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, आकार, संख्या आदि) प्रकट करने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।

उदाहरण– **रमण अच्छा** लड़का है। (कैसा लड़का ? 'अच्छा' विशेषण है।)

मैनें **रोचक** कहानी पढ़ी।(कैसी कहानी? 'रोचक' विशेषण है।)

नौ आदमी आए थे। (कितने आदमी? 'नौ' विशेषण है।)

प्रश्न 2. विशेषण के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर - विशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं–

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण– संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, स्वभाव, रंग, आकार, अवस्था आदि का बोध कराने वाले शब्दों को 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं।

उदाहरण– 1. रहमान अब **स्वस्थ** है।

2. निशा **मोटी** है।

2. संख्यावाचक विशेषण– ऐसे विशेषण शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की संख्या या गिनती बताते हैं, उन्हें 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं।

उदाहरण– 1. नगर में **दो** साधू आए हैं।

2. मेरे पास **चार** पुस्तके हैं।

3. परिमाणवाचक विशेषण– जिस विशेषण से किसी वस्तु की मात्रा (नाप, तोल आदि में) ज्ञात हो, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. सौरभ **पाँच किलो** चावल लाया है।

2. घोड़ा **थोड़ा** सुस्त हो गया है।

4. सार्वनामिक विशेषण– ऐसे सर्वनाम शब्द जो विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं।

उदाहरण– 1. वह आदमी तेज चल रहा है।

2. ऐसा घोड़ा कहाँ मिलेगा?

प्रश्न 3. विशेषण की कौन-कौन सी अवस्थाएँ होती हैं?

उत्तर - विशेषण की निम्नलिखित तीन अवस्थाएँ होती हैं–

1. मूलावस्था– इस अवस्था में विशेषण बिना किसी से तुलना किए अपने मूल रूप में विद्यमान रहता है;
जैसे– 1. वह **अच्छी** है। 2. तुम **सुंदर** हो। 3. यह घर **बड़ा** है।

2. उत्तरावस्था– इस अवस्था में विशेषण के द्वारा दो विशेष्यों की तुलना की जाती है;
जैसे– 1. वह अपने भाई **से अच्छी** है।
2. तुम नीता **से सुंदर** हो।
3. यह घर उस घर **से बड़ा** है।

3. उत्तमावस्था– इस अवस्था में विशेषण अनेक विशेष्यों की तुलना में एक को सबसे बढ़कर बताता है।
जैसे– 1. वह अपने सभी भाई-बहनों में **सबसे अच्छी** है।
2. तुम इस घर में **सबसे सुंदर** हो ।
3. यह घर **सबसे बड़ा** है।

प्रश्न 4. सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में क्या अंतर है?

उत्तर - सार्वनामिक विशेषण तथा सर्वनाम में अंतर–

ऐसे सर्वनाम शब्द जो विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। यह संज्ञा से पूर्व होने वाला सर्वनाम होता है; जैसे– **वह** बालक कल आया है में **'वह'** सार्वनामिक विशेषण है, क्योंकि **'वह'** बालक की ओर संकेत कर रहा है।

संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– मैं, हम, तुम आदि शब्द सर्वनाम होते हैं।

प्रश्न 5. विशेष्य किसे कहते हैं?

उत्तर - वे संज्ञा या सर्वनाम शब्द जिनकी विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहा जाता है;

जैसे- 1. राधे **कमजोर** हो गया है।	इसमें राधे विशेष्य है।
2. अपना **दाहिना** हाथ दिखाओ।	इसमें हाथ विशेष्य है।
3. कमरा **बंद** है।	इसमें कमरा विशेष्य है।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटिए तथा उनके भेद भी लिखिए-

1. मेरी मोटी पुस्तक कहाँ गई?	**विशेषण - मोटी**	**भेद - गुणवाचक विशेषण**
2. वह लड़का क्या काम करता है?	**विशेषण - वह**	**भेद - सार्वनामिक विशेषण**
3. पाँच आम खट्टे निकले।	**विशेषण - पाँच,खट्टे**	**भेद - संख्यावाचक, गुणवाचक**
4. काली गाय सामने बैठी है।	**विशेषण - काली**	**भेद - गुणवाचक**
5. चौगुना लाभ पाकर भी तुम खुश नहीं।	**विशेषण - चौगुना**	**भेद - परिमाणवाचक**
6. सारा दूध बिल्ली पी गई।	**विशेषण - सारा**	**भेद - परिमाणवाचक**

(ग) निम्नलिखित वाक्यों के सामने दिए गए निर्देश के अनुसार विशेषण की अवस्थाएँ बदलिए–

1. राहुल कक्षा में **सबसे अच्छा** है।	(मूलावस्था)	**राहुल कक्षा में अच्छा है।**
2. अर्पित **मेहनती** छात्र है।	(उत्तरावस्था)	**अर्पित अधिक मेहनती छात्र है।**
3. विदित **समझदार** लड़का है।	(उत्तमावस्था)	**विदित सबसे समझदार लड़का है।**
4. हम **उच्च** शिखर पर खड़े थे।	(उत्तरावस्था)	**हम उच्चतर शिखर पर खड़े थे।**
5. मैंने **पुरानी** साड़ी भिखारिन को दे दी।	(उत्तमावस्था)	**मैंने सबसे पुरानी साड़ी भिखारिन को दे दी।**

10. क्रिया एवं काल

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. क्रिया किसे कहते हैं ? क्रिया के कितने रूप हैं?

उत्तर– जिन शब्दों से किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।

कार्य के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित दो रूप होते हैं–

1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया

प्रश्न 2. सकर्मक क्रिया तथा अकर्मक क्रिया में क्या अंतर है?

उत्तर– सकर्मक क्रिया तथा अकर्मक क्रिया में अंतर–

सकर्मक का अर्थ है– कर्म के साथ। क्रिया के व्यापार का फल जब कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है तो क्रिया सकर्मक होती है; जैसे– राम **पत्र** लिखता है, कृष्ण ने **कंस** को मारा। यहाँ कर्म 'पत्र' और 'कंस' हैं।

अकर्मक का अर्थ है– कर्म के बिना। क्रिया के व्यापार (काम) का फल (प्रभाव) जब कर्ता (कार्य करने वाला) पर पड़े तो क्रिया अकर्मक होगी; जैसे– राम दौड़ता है, मोहन हँसता है। अकर्मक में कर्म कोई नहीं होता।

प्रश्न 3. रचना की दृष्टि से क्रिया के कौन-कौन से भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– रचना के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित छः भेद होते हैं–

1. संयुक्त क्रिया– जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है,उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।
उदाहरण– 1. वह दौड़ते हुए **गिर पड़ा**।

2. बरफ **पिघलने लगी**।

2. प्रेरणार्थक क्रिया– जब कर्ता किसी कार्य को स्वयं नहीं करता, बल्कि दूसरे से करवाता है, तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण– 1. मंगल ने अपने नौकर से दवा **मँगाई**।

2. सुधा ने कुली से सामान **ढुलवाया**।

3. पूर्वकालिक क्रिया– यदि मुख्य क्रिया से पूर्व ही कोई अन्य क्रिया पूर्ण हो गई हो, तो उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण– 1. वह खाना **खाकर** आया है।

2. उसने पाठ **याद करके** सुनाया।

4. नामधातु क्रिया– जो क्रियाएँ संज्ञा अथवा विशेषण शब्दों से मिलकर बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रियाएँ कहते हैं।

उदाहरण– 1. अध्यापक को देखकर वह **शरमाता** है। (शरम–शरमाना)

2. मामला कुछ **गरमा** गया है। (गरम –गरमाना)

5. अनुकरणात्मक क्रिया– जो क्रिया किसी ध्वनि के अनुकरण के आधार पर बना ली जाती है, उसे अनुकरणात्मक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण– 1. पेड़ों पर चिड़ियाँ **चहचहा रही हैं**।

2. हमने जोर से दरवाजा **खटखटाया** ।

6. विधिसूचक क्रिया– जो क्रिया विधि (आज्ञा, प्रार्थना ,परामर्श) आदि को प्रकट करती है, उसे विधिसूचक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण– 1. यहाँ से बाहर जाकर **बैठो**।

2. कृपा करके उसे यहाँ **बुलाइए**।

प्रश्न 4. काल किसे कहते हैं? काल के कितने भेद होते हैं?

उत्तर– क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने का समय ज्ञात होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

1. वर्तमान काल
2. भूतकाल
3. भविष्यत् काल

प्रश्न 5. वर्तमान काल के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– वर्तमान काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

1. सामान्य वर्तमान काल– जिस काल के वाक्यों से वर्तमान काल में क्रिया के होने का सामान्य बोध होता है, उसें सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।

उदाहरण– 1. आकाश पत्र **लिखता है**।

2. विशाल प्रतिदिन **व्यायाम करता है**।

2. संदिग्ध वर्तमान काल– जिस काल के वाक्यों से क्रिया के होने में संदेह प्रकट किया जाता है, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।

उदाहरण– 1. विनय स्टेशन **जा रहा होगा**।

2. मीनाक्षी अभी **आती होगी**।

3. अपूर्ण वर्तमान काल– जिस काल के वाक्यों से क्रिया के चलते रहने का बोध होता है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

उदाहरण– 1. शिखर पतंग **उड़ा रहा है**।

2. वैभव क्यों **रो रहा है**?

प्रश्न 6. भविष्यत् काल के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– भविष्यत् काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

1. सामान्य भविष्यत् काल– इस काल के वाक्यों से कार्य के भविष्यत् काल में होने की सामान्य अवस्था प्रकट होती है।

उदाहरण– 1. मैं अब घर **जाऊँगा**।

2. बालक **पढ़ेगा**।

2. संभाव्य भविष्यत् काल– इस काल के वाक्यों से कार्य के भविष्य में होने की संभावना प्रकट होती है।

उदाहरण– 1. आज **शायद** वर्षा हो।

2. कल **शायद** मैं न आ सकूँ।

3. हेतुहेतुमद भविष्यत् काल– इस काल के वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है।

उदाहरण– 1. यदि तुमने मेरी बात नहीं **मानी**, तो **पछताओगे**।

2. अगर वह **आया**, तो हम चले **जाएँगे**।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं के सकर्मक/अकर्मक भेदों को उनके सामने लिखिए–

1. हमने रामायण पढ़ी। **सकर्मक**
2. गाय दूध नहीं देगी। **अकर्मक**
3. रमा एक कविता पढ़ेगी। **सकर्मक**
4. आज वर्षा होगी। **अकर्मक**
5. रवि ने मेरी बात को स्वीकार कर लिया। **सकर्मक**
6. मैं अब पढ़ना चाहता हूँ। **अकर्मक**

(ग) निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार काल-परिवर्तन कीजिए–

1. क्या तुम इस लड़के को जानते हो? (भूतकाल)

क्या तुम इस लड़के को जानते थे?

2. आपको कल बुलाया जाएगा। (वर्तमान काल)

आपको कल बुलाया है।

3. हमने पाठ याद नहीं किया। (भविष्यत् काल)

हम पाठ याद नहीं करेंगे।

4. मैं इस विद्यादय में पढ़ता हूँ। (भूतकाल)

मैं इस विद्यालय में पढ़ता था।

5. वे कोलकाता कल पहुँचेंगे। (भूतकाल)

वे कोलकाता कल पहुँच गए।

6. वह शाम को टहलने जाया करता था। (भविष्यत् काल)

वह शाम को टहलने जाएगा।

11. अव्यय या अविकारी शब्द

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. क्रियाविशेषण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

उदाहरण– 1. राधिका बाजार से **अब** लौटी है।

2. कुरसी के **नीचे** कुत्ता है।

3. पिताजी **अचानक** आ गए।

4. परेश **उधर** चला गया।

वाक्यों में 'अब', 'नीचे', 'अचानक', तथा 'उधर' से ज्ञात होता है कि क्रिया किस प्रकार से हो रही है, ये शब्द 'क्रियाविशेषण' हैं।

प्रश्न 2. क्रियाविशेषण के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक का नाम लिखिए ।

उत्तर– क्रियाविशेषण निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं–

1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

2. कालवाचक क्रियाविशेषण

3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

प्रश्न 3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

उत्तर - जिस अव्यय शब्द से क्रियाविशेषण की रीति (ढंग) का बोध हो, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. तुम बहुत **धीरे** चलते हो।

2. वह **सचमुच** दौड़ा।

इन वाक्यों में 'धीरे' तथा 'सचमुच' रीतिवाचक क्रियाविशेषण हैं क्योंकि ये क्रमशः 'चलते हो' तथा 'दौड़ा' क्रियाओं की विशेषता बताते हैं।

प्रश्न 4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण क्या होते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर - जिस अव्यय शब्द से क्रिया के परिमाण (मात्रा) का बोध हो, उसे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. वह आज **बहुत** बोला।

2. प्रशांत **प्रायः** चुप रहता है।

इन वाक्यों में 'बहुत' और 'प्रायः' परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं, क्योंकि वे क्रमशः 'बोला' तथा 'चुप रहता है' क्रियाओं की परिमाण संबंधी विशेषता बताते हैं।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रियाविशेषण शब्दों को छाँटिए–

1. लड़के उधर खेल रहे हैं।	**उधर**
2. मैं कल की ट्रेन पकड़ लूँगा।	**कल**
3. मामला थोड़ा गरमा गया है।	**थोड़ा**
4. गाड़ी धीरे-धीरे चल रही है।	**धीरे-धीरे**
5. वह शीघ्र लौटेगा।	**शीघ्र**

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित क्रियाविशेषण शब्दों से कीजिए–

1. माता जी बहुत **धीरे-धीरे** चल रही हैं।
2. वह **नीचे** छिप गया है।
3. तुम्हारी बहन **यहाँ** रहती है।
4. अच्छे बच्चे **कभी** झूठ नहीं बोलते।
5. बच्चों! मेरी **ओर** देखो।

12. संबंधबोधक अव्यय

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. संबंधबोधक अव्यय किसे कहते हैं। उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर– वे शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से प्रकट करते हैं, संबंधबोधक कहलाते हैं।

उदाहरण– 1. बिना भाग्य **के कुछ** नहीं मिलता।

2. हाथी **के पीछे** भीड़ चल रही है।

3. सूर्योदय **से पहले** वर्षा हुई थी।

4. मित्र **के बिना** मन नहीं लगता।

वाक्यों में 'के कुछ', 'के पीछे', 'से पहले ', 'के बिना' संबंधबोधक अव्यय हैं।

प्रश्न 2. बनावट के आधार पर संबंधबोधक कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– बनावट के आधार पर संबंधबोधक निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं–

1. रूढ– का, की, के ,को, ने, से, में, पर आदि।

उदाहरण– 1. वह भीड़ **के** आगे चल रहा है।

2. वह हम **से** दूर खड़ा था।

2. यौगिक– के पीछे, के आगे, के बिना, के कारण आदि।

उदाहरण– 1. नेता **के पीछे** भीड़ चल रही है।

2. मित्र **के बिना** मन नहीं लगता।

प्रश्न 3. अर्थ के आधार पर संबंधबोधक कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– अर्थ के आधार पर संबंधबोधक निम्नलिखित दस प्रकार के होते हैं–

1. कालवाचक– आगे, पीछे, पहले, बाद, पश्चात्, उपरांत ।

उदाहरण– 1. गाँधी जी **के पीछे** लोग नारे लगाते चल रहे थे।

2. सूर्योदय **से पहले** वर्षा हुई थी।

2. स्थानवाचक– पास, दूर, निकट, समीप, नीचे, में, पर।

उदाहरण– 1. गीतिका **के पास** सुंदर खिलौना है।

2. पेड़ **के नीचे** लड़का बैठा है।

3. दिशावाचक– ओर, तरफ, प्रति, पार।

उदाहरण– 1. सूर्य पूर्व की ओर से निकलता है।

2. नदी के पार मेरा घर है।

4. साधनवाचक– द्वारा, सहारे, जरिए, जबानी, से।

उदाहरण– 1. चाकू के **द्वारा** तरबूज काटो।

2. अंधे ने लाठी के **सहारे** सड़क पार की ।

5. उद्देश्यवाचक– के हेतु , कारण, लिए, वास्ते, खातिर।

उदाहरण– 1. सीता के **लिए** राम ने धनुष तोड़ा।

2. श्री रामचन्द्र जी वचन की **खातिर** वन में गए।

6. कारणवाचक– के कारण, के लिए, के मारे।

उदाहरण– 1. बीमारी **के कारण** मैनें कल छुट्टी की।

2. बच्चे **के लिए** पिताजी ने खिलौना खरीदा।

7. विरोधवाचक– खिलाफ, विरुद्ध, विपरीत, के प्रतिकूल।

उदाहरण– 1. किसी ने तुम्हें मेरे **विरुद्ध** भड़काया है।

2. शीला ने दहेज के **खिलाफ** आवाज उठाई।

8. समतासूचक– समान, तरह, तुल्य, भाँति, योग्य।

उदाहरण– 1. सभी चाहते हैं कि वे राजा राम के **समान** हों ।

2. सुदामा और कृष्ण की **तरह** मित्रता कहाँ मिलेगी।

9. सहसूचक– के साथ, संग, भर, मात्र, के समेत।

उदाहरण– 1. निशा **के साथ** राखी नाच रही है।

2. मैं रात **भर** जागता रहा।

10. दूरीसूचक– से, से दूर, से परे, से हटकर।

उदाहरण– 1. वह हम **से दूर** खड़ा था।

2. हडिंबा मंदिर **से परे** पहाड़ियाँ हैं।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित संबंधबोधक अव्ययों से कीजिए–

1. नेता के **पीछे** लोग नारे लगाते चल रहे थे।
2. उसके **लिए** कुछ भी करना व्यर्थ है।
3. वर्षा **के कारण** बिजली कड़की थी।
4. पुस्तकों **के बिना** पढ़ाई संभव नहीं है।
5. मेरे **पास** जादू की छड़ी नहीं है।
6. सूर्योदय **से पहले** जागना स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है।

13. समुच्चयबोधक अव्यय

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. समुच्चयबोधक अव्यय किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर– दो शब्दों, वाक्यों या वाक्य खंडों को आपस में जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक अव्यय या योजक कहलाते हैं।

उदाहरण– 1. राम **और** लक्ष्मण वन गए।

2. अमृत खेलेगा **या** प्रीतम।

3. उसे चावल **लेकिन** मुझे रोटी पसंद है।

प्रश्न 2. बनावट के आधार पर समुच्चयबोधक कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– बनावट के आधार पर समुच्चयबोधक निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं–

1. रूढ़– किंतु, परंतु, अथवा, और, कि, पर।

उदाहरण– 1. मृदुला **और** सरला पढ़ रही हैं।

2. पेड़ **पर** पक्षी बैठे हैं।

2. यौगिक– क्योंकि, फिर भी, नहीं तो, यद्यपि।

उदाहरण– 1. मैनें कोशिश तो की **फिर भी** काम नहीं बना।

2. वह घर के अंदर चला गया। **क्योंकि** बाहर वर्षा हो रही थी।

प्रश्न 3. अर्थ के आधार पर समुच्चयबोधक कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– अर्थ के आधार पर समुच्चयबोधक निम्नलिखित आठ प्रकार के होते हैं–

1. संयोजक– और, तथा, एवं।

उदाहरण– 1. मैंने अमरूद **और** केले खरीदे।

2. यह रहा तुम्हारा **तथा** तुम्हारे भाई का इनाम।

2. वियोजक– अथवा, या, न, या।

उदाहरण– 1. वर्षा हो **अथवा** न हो, मैं अवश्य जाऊँगा।

2. **न** तो वह स्वयं सोया **न** ही उसने मुझे सोने दिया।

3. उद्देश्यसूचक– जिससे कि, ताकि, कि।

उदाहरण– 1. मैंने उसे अच्छी, तरह समझाया **ताकि** कोई गड़बड़ न हो।

2. राम इसलिए नहीं आया **कि** कहीं उसका अपमान न हो।

4. विरोधसूचक– पर, परंतु, किंतु, लेकिन।

उदाहरण– 1. मैंने चंद्रकांत को समझा दिया था **किंतु** वह भूल गया।

2. वह कहना तो बहुत कुछ चाहता था **परंतु** चुप रह गया।

5. कारणसूचक– क्योंकि, इसलिए कि।

उदाहरण– 1. मैं वहाँ नहीं आ सका **क्योंकि** मौसम बहुत खराब था।

2. छात्र को दंड मिला **क्योंकि** उसने गृहकार्य नहीं किया था।

6. परिमाणसूचक– अतः, इसलिए, अतएव।

उदाहरण– 1. समय पर वर्षा नहीं हुई, **अतः** सूखा पड़ गया।

2. वह बीमार था, **इसलिए** तैयारी नहीं कर पाया।

7. संकेतसूचक– यदि––––––––––तो, अगर––––––––––––तो।

उदाहरण– 1. **यदि** आपने मेरा साथ न दिया, **तो** मैं बरबाद हो जाऊँगा ।

2. **यद्यपि** उसने प्रार्थना की, **तथापि** अधिकारी नहीं माने ।

8. स्वरूपसूचक– कि, जैसे, मानो।

उदाहरण– 1. शोभा ने बताया **कि** उसकी माँ बीमार है।

3. घने बादल छाये हुए हैं, **मानो** वर्षा होगी।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित समुच्चबोधकों से कीजिए–

1. वह नागपुर चला गया था **इसलिए** उससे भेंट नहीं हो पाई।
2. रात को चोर नहीं **किंतु** डकैत आए थे।
3. अर्जुन वीर था **लेकिन** उसे मोह हो गया था।
4. रेखा ने बी०ए० किया **और** सुनीता ने एम०ए०।
5. संकट में धैर्य **एवं** धर्म की परीक्षा होती है।
6. मैं यह काम कर दूँगा **लेकिन** तुम्हें भी मेरा काम करना होगा।

14. विस्मयादिबोधक अव्यय

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर– वे शब्द जो खुशी, दु:ख, घृणा, आश्चर्य आदि मन के भावों को प्रकट करते हैं, विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं।

उदाहरण– 1. ओहो! गुरु जी आए हैं।

2. हाय! मैं लुट गया।

3. अरे! तुम यहीं हो।

इन वाक्यों के प्रारंभ में आए हुए शब्द 'ओहो' 'अरे' तथा 'हाय' क्रमशः आश्चर्य तथा शोक के भाव व्यक्त करते हैं वे विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

प्रश्न 2. विस्मयादिबोधक अव्यय कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– विस्मयादिबोधक अव्यय के निम्नलिखित दस भेद हैं–

1. विस्मयसूचक– ओहो, अरे, धन्य, वाह, क्या, सच।

उदाहरण– 1 अरे ! तुम यहीं हो।

2. क्या! मेरा छोटा भाई प्रतियोगिता में प्रथम आया है?

2. हर्षसूचक– शाबाश, अहा, बहुत अच्छे, धन्य, वाह।

उदाहरण– 1.वाह ! कितना स्वादिष्ट खाना है।

2. शाबाश ! हमें तुम जैसे वीरों पर गर्व है।

3. शोकसूचक– आह, ओह, हाय, हे राम, क्षमा करना।

उदाहरण– 1. हाय ! छोटा-सा बालक अनाथ हो गया।

2. आह! बहुत पीड़ा है।

4.घृणासूचक– धिक, छिः, धत्, हट, थू-थू, दूर हट।

उदाहरण– 1.छिः-छिः! तुम्हारे जूतों में कीचड़ लगा है।

2. थू-थू! तुम जैसे गंदे आदमी से तो बात करना भी पाप है।

5. क्रोधसूचक– चुप, हट।

उदाहरण– 1. चुप! कितना शोर करते हो?

2. हट! तुम्हारे पीछे शेर है।

6. भयसूचक– बाप रे बाप, अरी मैया, उई माँ, हे भगवान।

उदाहरण– 1. बाप रे बाप! कितना भयानक दृश्य है।

2. उई माँ ! कितना बड़ा साँप है।

7. विवशतासूचक– काश, कदाचित्।

उदाहरण– 1. काश ! मैंने माँ की बात मानी होती।

2. कदाचित् ! बेचारे पर मुसीबत का पहाड़ ही टूट पड़ा।

8. संबोधनसूचक– हे, अरे, अरी, ओ, अजी।

उदाहरण– 1. अरे! तुम इतनी जल्दी आ भी गए।

2. अजी सुनिए! जरा यह सामान तो ला दो।

9. स्वीकृतिसूचक– अच्छा, अवश्य, ठीक, बिल्कुल, जी हाँ।

उदाहरण– 1. जी हाँ! मुझे सारी शर्तें स्वीकार हैं।

2. अच्छा! जैसा आपने कहा है, वैसे ही सारा कार्य करूँगा।

10. आशीर्वादसूचक– जियो, जय हो, सुखी रहो, दीर्घायु हो।

उदाहरण– 1. जियो ! हजारों साल।

2. सुखी रहो! यही हमारी कामना है।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को विस्मयादिबोधक चिह्न लगाकर शुद्ध कीजिए–

1. छि: छि: इतना घिनौना कार्य किया।	**छि:-छि:! इतना घिनौना कार्य किया।**
2. शाबाश तुमने अच्छी गेंदबाजी की।	**शाबाश! तुमने अच्छी गेंदबाजी की।**
3. हाय बेचारी बुढ़िया चल बसी।	**हाय! बेचारी बुढ़िया चल बसी।**
4. वाह वाह क्या कहानी लिखी है।	**वाह-वाह! क्या कहानी लिखी है।**
5. अरे तुम अंधेरे में खड़े हो।	**अरे! तुम अंधेरे में खड़े हो।**
6. ओहो यह तो महात्मा गाँधी का चित्र है।	**ओहो! यह तो महात्मा गाँधी का चित्र है।**

(ग) निम्नलिखित विस्मयादिबोधक शब्दों से वाक्य बनाइए–

अरे	–	**अरे! तुम यहीं हो।**
हे राम	–	**हे राम! यह क्या हो गया?**
उफ	–	**उफ! कितनी गरमी है?**
शाबाश	–	**शाबाश! तुम कक्षा में प्रथम आए हो।**
वाह	–	**वाह! कितना स्वादिष्ट भोजन बनाया है।**
छि:छि:	–	**छि:-छि:! तुम्हारे जूतों में कीचड़ लगा है।**
हे प्रभु	–	**हे प्रभु! अब तेरा ही सहारा है।**

15. संधि

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. संधि किसे कहते हैं ? संधि के कितने प्रकार होते हैं?

उत्तर– दो वर्णों के मेल से उनके मूल रूप में जो परिवर्तन या विकार आ जाता है, वह संधि कहलाता है। संधि के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि।

प्रश्न 2. स्वर संधि से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– स्वर संधि यानी स्वरों का मेल। दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को 'स्वर संधि' कहते हैं।

उदाहरण– महा + आत्मा = महात्मा

सु + उक्ति = सूक्ति

पहले उदाहरण में 'महा' के 'आ' तथा आत्मा के 'आ' का मेल हुआ, जिससे महात्मा बना तथा दूसरे उदाहरण में 'सु' के 'उ' तथा 'उक्ति' के 'उ' का मेल हुआ, जिससे सूक्ति बना।

प्रश्न 3. गुण संधि तथा वृद्धि संधि में क्या अंतर है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– गुण संधि तथा वृद्धि संधि में अंतर–

गुण संधि में यदि अ, आ, के बाद इ, ई, हो, तो दोनों के स्थान पर ए तथा अ, आ के बाद उ, ऊ हो, तो दोनों के स्थान पर ओ तथा अ, आ के बाद ऋ आए, तो दोनों के स्थान पर अर् हो जाता है।

उदाहरण– देव + इन्द्र = देवेन्द्र = (अ + इ = ए)
गण + ईश = गणेश = (अ + ई = ए)
राका + ईश = राकेश = (आ + ई = ए)
पर + उपकार = परोपकार = (अ + उ = ओ)
महा + उदय = महोदय = (आ + उ = ओ)

वृद्धि संधि में यदि अ, आ के बाद ए, ऐ, हो तो दोनों के स्थान पर ऐ तथा अ, आ के बाद ओ,औ हो, तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है;

उदाहरण– एक + एक = एकैक = (अ + ए = ऐ)
सदा + एव = सदैव = (आ + ए = ऐ)
महा + ओज = महौज = (आ + ओ = औ)
महा + औषधि = महौषधि = (आ + औ = औ)

प्रश्न 4. दीर्घ संधि की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर के बाद ह्रस्व या दीर्घ स्वर आएँ, तो दोनों वर्ण मिलकर दीर्घ स्वर हो जाते हैं। इसे दीर्घ संधि कहते हैं।

उदाहरण– सत्य + अर्थी = सत्यार्थी = (अ + अ = आ)
पुण्य + आत्मा = पुण्यात्मा = (अ + आ = आ)
विद्या + आलय = विद्यालय = (आ + आ = आ)
दीक्षा + अंत = दीक्षांत = (आ + अ = आ)
मही + इन्द्र = महीन्द्र = (ई + इ = ई)
रजनी + ईश = रजनीश = (ई + ई = ई)

प्रश्न 5. व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि में क्या अंतर है?

उत्तर– व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि में अंतर–

व्यंजन संधि में आपस में मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन और दूसरे शब्द के आरंभ में कोई स्वर अथवा व्यंजन हो, तो उनके बीच होने वाले मेल को 'व्यंजन संधि' कहते हैं;

जैसे– दिक् + गज = दिग्गज
दिक् + अंबर = दिगंबर
तत् + लीन = तल्लीन
उत् + लेख = उल्लेख
उत् + ज्वल = उज्ज्वल

विसर्ग संधि में आपस में मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में विसर्ग और दूसरे शब्दों के

प्रारंभ में स्वर अथवा व्यंजन हो, तो उनके बीच होने वाले मेल को 'विसर्ग संधि' कहते हैं;

जैसे– मनः + हर = मनोहर
निः + धन = निधन
दुः + चरित्र = दुश्चरित्र
निः + चय = निश्चय
दुः + आत्मा = दुरात्मा

(ख) निम्नलिखित शब्दों में संधि विच्छेद कीजिए तथा संधि का नाम भी लिखिए–

मनोहर	=	**मनः**	+	**हर**	**विसर्ग संधि**
तल्लीन	=	**तत्**	+	**लीन**	**व्यंजन संधि**
महोत्सव	=	**महा**	+	**उत्सव**	**गुण संधि**
स्वागत	=	**सु**	+	**आगत**	**यण संधि**
सज्जन	=	**सत्**	+	**जन**	**व्यंजन संधि**
सदैव	=	**सदा**	+	**एव**	**वृद्धि संधि**
वधूत्सव	=	**वधू**	+	**उत्सव**	**दीर्घ संधि**
प्रत्येक	=	**प्रति**	+	**एक**	**यण संधि**
दिगंबर	=	**दिक्**	+	**अंबर**	**व्यंजन संधि**
रवीन्द्र	=	**रवि**	+	**इन्द्र**	**दीर्घ संधि**

(ग) निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

प्रति	+	उपकार	=	**प्रत्युपकार**
मत	+	ऐक्य	=	**मतैक्य**
यदि	+	अपि	=	**यद्यपि**
निः	+	आशा	=	**निराशा**
तत्	+	लीन	=	**तल्लीन**
महा	+	उदय	=	**महोदय**
तमः	+	गुण	=	**तमोगुण**
नै	+	अक	=	**नायक**
नीला	+	अंबर	=	**नीलांबर**
पर	+	उपकार	=	**परोपकार**
सत्	+	जन	=	**सज्जन**
सूर्य	+	अस्त	=	**सूर्यास्त**
दुः	+	उपयोग	=	**दुरुपयोग**
परि	+	नाम	=	**परिणाम**
पो	+	अन	=	**पवन**
शरत्	+	चंद्र	=	**शरद्चंद्र**

16. समास

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. समास किसे कहते हैं? समास विग्रह से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं;

जैसे– गुणों से हीन = गुणहीन
देश के प्रति भक्ति = देशभक्ति
शिव का आलय = शिवालय
धन से हीन = धनहीन

समस्त पदों के शब्दों व विभक्तियों को अलग-अलग करना समास-विग्रह कहलाता है।

					समास-विग्रह
जैसे– पूजाघर	=	पूजा	+	घर	पूजा के लिए घर
राजपुत्र	=	राजा	+	पुत्र	राजा का पुत्र

प्रश्न 2. समास के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक का नाम लिखिए।

उत्तर– समास के निम्नलिखित छः भेद होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास

प्रश्न 3. अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर– जिस समास में पहला पद प्रधान हो तथा वह अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

उदाहरण– शक्ति के अनुसार = यथाशक्ति
डर के बिना = निडर
विधि के अनुसार = यथाविधि
पेट भरकर = भरपेट

प्रश्न 4. तत्पुरुष समास के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– तत्पुरुष समास के निम्नलिखित छः भेद होते हैं–

1. कर्म तत्पुरुष– कर्म तत्पुरुष समास में कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है।

उदाहरण– गगन को चूमने वाला = गगनचुंबी
चिड़िया को मारने वाला = चिड़ीमार

2. करण तत्पुरुष– करण तत्पुरुष समास में करण कारक की विभक्तियों 'से/के द्वारा ' का लोप हो जाता है।

उदाहरण– धन से हीन = धनहीन
गुणों से युक्त = गुणयुक्त

3. संप्रदान तत्पुरुष– संप्रदान तत्पुरुष समास में संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप हो जाता है।

उदाहरण– स्वदेश के लिए प्रेम = स्वदेश प्रेम
रण के लिए भूमि = रणभूमि

4. अपादान तत्पुरुष– अपादान तत्पुरुष समास में अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो जाता है।

उदाहरण– धन से हीन = धनहीन
अपराध से मुक्त = अपराध मुक्त

5. संबंध तत्पुरुष– संबंध तत्पुरुष समास में संबंध कारक की विभक्तियों 'का/की/के' का लोप हो जाता है।

उदाहरण– राजा का मंत्री = राजमंत्री
आम का चूरा = अमचूर

6. अधिकरण तत्पुरुष– अधिकरण तत्पुरुष समास में अधिकरण कारक की विभक्तियों 'में/पर' का लोप हो जाता है।

उदाहरण– विचार में मग्न = विचारमग्न
आत्मा पर विश्वास = आत्मविश्वास

प्रश्न 5. कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अंतर–

कर्मधारय समास में जहाँ दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है;

जैसे– महात्मा – महान है जो आत्मा।
कमल नयन – कमल के समान नयन।

बहुब्रीहि समास में दोनों पद किसी तीसरे पद की विशेषता प्रकट करते हैं।

जैसे– महात्मा – महान आत्मा है जिसकी अर्थात् विशेष व्यक्ति।
कमलनयन – कमल के समान नयन हैं जिसके अर्थात् विष्णु।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में समास विग्रह कीजिए तथा समास का नाम भी लिखिए–

शब्द	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
लंबोदर	**लंबा है उदर जिसका**	**बहुब्रीहि समास**
राष्ट्रभक्ति	**राष्ट्र के लिए भक्ति**	**संप्रदान तत्पुरुष**
दोपहर	**दो पहरों का समूह**	**द्विगु समास**
भाई-बहन	**भाई और बहन**	**द्वंद्व समास**
त्रिकोण	**तीन कोणों का समूह**	**द्विगु समास**
देशप्रेम	**देश के लिए प्रेम**	**संप्रदान तत्पुरुष**

(ग) निम्नलिखित विग्रहों से समस्त पद बनाइए और उनका समास भी लिखिए–

विग्रह	समस्त पद	समास का नाम
माता और पिता	**माता-पिता**	**द्वंद्व समास**
नीला है जो कंठ	**नीलकंठ**	**बहुब्रीहि समास**
विचार में मग्न	**विचारमग्न**	**अधिकरण तत्पुरुष समास**
घोड़े पर सवार	**घुड़सवार**	**अधिकरण तत्पुरुष समास**
आदर सहित	**सादर**	**अव्ययीभाव समास**
स्वदेश के लिए प्रेम	**स्वदेश प्रेम**	**संप्रदान तत्पुरुष**
शिव का आलय	**शिवालय**	**संबंध तत्पुरुष**

17. उपसर्ग

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. उपसर्ग किसे कहते हैं ?

उत्तर– उपसर्ग शब्द उप+सर्ग शब्द के मेल से बना है, जिसमें सर्ग मूल शब्द है, जिसका अर्थ होता है रचना निर्माण करना आदि। अत: 'सर्ग' मूल शब्द से पूर्व 'उप' शब्दांश लगाने से उसका अर्थ हुआ–पहले जोड़ना। इस प्रकार–

'वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं; उपसर्ग कहलाते हैं।

जैसे– **शब्द**	**मूल शब्द**	**उपसर्ग**
अपमान	मान	अप
अप्रसन्न	प्रसन्न	अ
सज्जन	जन	सत्

उपर्युक्त उपसर्गों के जुड़ जाने से मूल शब्दों के अर्थ में कुछ विशेषता या परिवर्तन आ गया है, जैसे– 'मान' का अर्थ है 'इज्जत'; यदि इसमें 'अप' उपसर्ग जोड़ दिया जाए, तो 'अपमान' शब्द बनता है जिसका अर्थ है 'बेइज्जती'।

प्रश्न 2. उपसर्ग के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर– उपसर्ग निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग–

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द**
आ	तक, इधर	आजन्म, आक्रमण, आजीवन।
अनु	पीछे	अनुरूप, अनुचर, अनुगामी।

2. हिंदी के उपसर्ग–

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द**
अ	अभाव, निषेध	अचेत, अछूत, अजन्मा।
अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधकचरा।

3. उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द**
बे	रहित	बेबाक, बेकाबू, बेखटके।
ना	नहीं, अभाव	नासमझ, नालायक, नापसंद।

4. संस्कृत के अव्यय / उपसर्ग–

अव्यय / उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द**
चिर	बहुत, देर	चिरायु, चिरकाल, चिरस्थायी।
सह	साथ	सहयोग, सहपाठी।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए–

उ + ऋण = **उऋण**

आ + जीवन = **आजीवन**

गैर + कानूनी = **गैरकानूनी**

सु + जन = **सुजन**

दुस् + साहस = **दुस्साहस**

अप + यश = **अपयश**

अन + पढ़ = **अनपढ़**

सर + पट = **सरपट**

दुर् + गुण = **दुर्गुण**

निर् + अपराध = **निरपराध**

(ग) निम्नलिखित उपसर्गों की सहायता से तीन-तीन शब्द बनाइए–

पुनः = **पुनर्मिलन, पुनर्जन्म, पुनरूत्थान।**

प्र = **प्रबल, प्रलय, प्रचार।**

अधि = **अधिकार, अधिपति, अधिकरण।**

नि = **निवास, नियम, निवारण।**

बा = **बाकायदा, बासबब, बाइज्जत।**

18. प्रत्यय

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. प्रत्यय किसे कहते हैं ? प्रत्यय कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर– 'वे शब्दांश जो मूल शब्द के अंत में जुड़कर उसका अर्थ बदल दें अथवा उसमें कोई विशेषता ला दें, प्रत्यय कहलाते हैं।

उदाहरण– दूध + वाला = दूधवाला

बच + पन = बचपन

प्रत्यय निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं–

1. कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

प्रश्न 2. कृत प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर - **कृत प्रत्यय–** जो प्रत्यय क्रिया के धातु रूप के अंत में जुड़कर अनेक प्रकार के शब्दों की रचना में सहायक होते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

उदाहरण– लिख + आवट = लिखावट।

सूख + आ = सूखा आदि।

तद्धित प्रत्यय– वे प्रत्यय जो क्रिया से भिन्न अन्य शब्दों के अंत में जुड़ते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

उदाहरण– **प्रत्यय** **शब्द**

आ छात्रा, प्रिया, पूजा।

अना रचना, कल्पना, सूचना।

(ख) बताइए, निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा प्रत्यय जुड़ा है?

तरंगित	**इत**	लुभावना	**आवना**	लेनदार	**दार**
रुकावट	**आवट**	कठिनतम	**तम**	फलित	**इत**
खटास	**आस**	बुद्धिमान	**मान**	पड़ाव	**आव**
गायक	**अक**	रक्तिमा	**इमा**	महत्व	**त्व**
घटिया	**इया**	कुलीन	**ईन**	सूचना	**अना**
पनिहारा	**हारा**	लड़कपन	**पन**	क्रोधी	**ई**

19. शब्द भंडार

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. विलोम शब्द और पर्यायवाची शब्द में क्या अंतर है?

उत्तर– विलोम शब्द और पर्यायवाची शब्द में अंतर–

	विलोम शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
1.	विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।	एक–सा अर्थ बताने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
2.	विलोम शब्दों को विपरीतार्थक शब्द भी कहते हैं।	पर्यायवाची शब्दों को समानार्थी शब्द भी कहते हैं।
3.	कुछ विलोम शब्द स्वतंत्र भी होते हैं।	पर्यायवाची शब्द अधिकांशत: रूढ़ शब्द होते हैं।
4.	अधिकांशत: विलोम शब्द उपसर्गों के प्रयोग से बनते हैं।	किसी वस्तु के गुण, रूप, अवस्था आदि के आधार पर उसके पर्याय का जन्म होता है।

प्रश्न 2. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग कब किया जाता है?

उत्तर– अपनी अभिव्यक्ति तथा रचना को रोचक बनाने के लिए और अपने मनोभावों को संक्षेप में व्यक्त करने के लिए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

या

अपनी बात को कम से कम शब्दों में कहने के लिए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 3. तत्सम और तद्भव शब्दों से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर– तत्सम शब्द– तत् (उसके)+सम(समान) यानी वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में बिना किसी बदलाव के ले लिए गए हैं, तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे– क्षेत्र, कार्य, मृत्यु, उत्थान, अभीष्ट, मातृ, पितृ आदि।

तद्भव शब्द– तद् (उससे)+भव (होना)हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी हैं जो मूल रूप से तो संस्कृत के थे। परंतु हिंदी भाषा में इन्हें कुछ रूप बदलकर प्रयोग किया जाने लगा है। इन शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं। जैस– अँधेरा, आग, कान, खेत, ऊँचा आदि।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में आए विपरीतार्थक शब्दों के जोड़े छाँटकर लिखिए–

1. व्यापार में खरीद और बिक्री का सिलसिला चलता रहता है।

   खरीद-बिक्री

2. हमें सबका आदर करना चाहिए, किसी का निरादर करना उचित नहीं है।

   आदर-निरादर

3. ज्ञानी सबका भला चाहता है, जबकि अज्ञानी केवल अपना।

   ज्ञानी-अज्ञानी

4. जहाँ-जहाँ अंधकार है, वहाँ हमें प्रकाश करने की चेष्टा करनी चाहिए।

   अंधकार-प्रकाश

(ग) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

घर - **भवन, सदन, आलय, धाम, निकेत।**

अश्व - **हय, बाजि, तुरंग, घोड़ा।**

धरती - **धरा, वसुधा, मही, भू, मेदिनी।**

पुत्री - **सुता, तनूजा, बेटी, तनया।**

मूर्ख - **अज्ञानी, जड़, जड़मति, अज्ञ।**

जल - **नीर, सलिल, तोय, वारि, पानी।**

चाँद - **शशि, चंद्रमा, राकेश, सुधांशु।**

(घ) निम्नलिखित अनेकार्थक शब्दों से अनुपयुक्त शब्द काटिए–

1. ज्येष्ठ – बड़ा, श्रेष्ठ, पूज्य, जेठ का मास।
2. गुरू – शिक्षक, भारी, बड़ा, मूर्ख।
3. कर – अस्त्र, किरण, हाथ, टैक्स।
4. अर्थ – धन, मतलब, प्रयोजन, फल

(ङ) निम्नलिखित समरूपी भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए–

प्रमाण	**सबूत**	निर्वाण	**मृत्यु**
प्रणाम	**नमस्कार**	निर्माण	**बनाना**
मात्र	**केवल**	शर	**बाण**
मातृ	**माता**	सर	**सिर**

(च) निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक शब्द लिखिए–

1. वर्ष में एक बार होने वाला — **वार्षिक**
2. ईश्वर में विश्वास रखने वाला — **आस्तिक**
3. जिसमें प्राण न हों — **निष्प्राण**
4. बिना वेतन काम करने वाला — **अवैतनिक**
5. जो साथ पढ़ता हो — **सहपाठी**
6. नगर में रहने वाला — **नागरिक**

(छ) निम्नलिखित की ध्वनियाँ लिखिए–

सुअर	–	**हुरड़-हुरड़ करना**
कबूतर	–	**गुटरगूँ करना**
धनुष	–	**टंकारना**
चूड़ियाँ	–	**खनकना**
कुत्ता	–	**भौंकना**
मोर	–	**केंकना**
गाय	–	**रंभाना**
हंस	–	**कूजना**
घंटा	–	**टनटनाना**
मेघ	–	**गरजना**
कोयल	–	**कूकना**
भैंस	–	**डकारना**

(ज) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

आँख	–	**अक्षि**
दाँत	–	**दंत**
काज	–	**कार्य**
गाँठ	–	**ग्रंथि**
आग	–	**अग्नि**
कोयल	–	**कोकिल**
ऊँट	–	**उष्ट्र**
चूरन	–	**चूर्ण**
होंठ	–	**ओष्ठ**
उल्लू	–	**उलूक**

20. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. मुहावरा किसे कहते हैं ?

उत्तर - जब कोई वाक्यांश सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, तो उसे मुहावरा कहते हैं–

जैसे– 'कैदी के भाग निकलने पर पहरेदार हाथ मलता रह गया।'

यहाँ मुहावरे 'हाथ मलना' का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है– पछताना।

प्रश्न 2. लोकोक्ति से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– वे स्वतंत्र वाक्य अथवा जन साधारण में प्रचलित उक्तियाँ अथवा कथन, जिसमें कोई पूर्ण सत्य अथवा विचार निहित होता है, लोकोक्ति कहे जाते हैं। लोकोक्ति को कहावत भी कहते हैं।

जैसे – अंधों में काना राजा

अर्थ – मूर्खों में थोड़ा ज्ञानी

प्रयोग – सारी कक्षा में रिषभ ही है,जो हिंदी व्याकरण का थोड़ा-बहुत ज्ञान रखता है। बस वही उनके बीच अंधों में काना राजा है।

(ख) नीचे दिए गए प्रत्येक मुहावरे के साथ अर्थ को रेखा खींचकर मिलाइए–

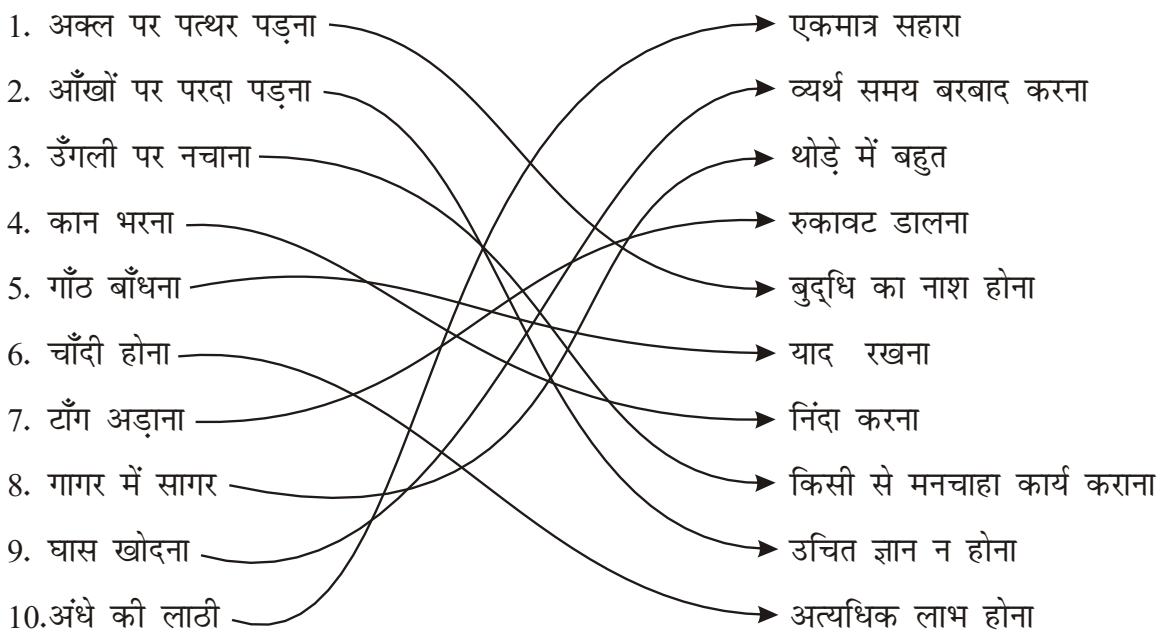

(ग) निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाइए–

1. **अँगूठा दिखाना** – कुछ देने से मना कर देना।
   वाक्य – सुमित ने नीरज से जब आम माँगे, तो उसने **अँगूठा दिखा दिया**।
2. **दाल न गलना** – बात न बनना।
   वाक्य – जब तक यह ऑफिसर है, तब तक किसी की **दाल नहीं गलने** वाली।
3. **गागर में सागर** – थोड़े में बहुत।
   वाक्य – बिहारी ने अपने दोहों में **गागर में सागर** भर दिया है।
4. **अंधे की लाठी** – एकमात्र सहारा।
   वाक्य – श्रवण कुमार अपने बूढे माँ–बाप के लिए **अंधे की लाठी** था।
5. **बाग–बाग होना** – अत्यंत प्रसन्न होना।
   वाक्य – बहुत दिन बाद पुत्र को घर वापस आते देखकर माता–पिता का दिल **बाग–बाग** हो गया।
6. **चाँदी होना** – अत्यधिक लाभ होना।
   वाक्य – कुछ वस्तुओं के मूल्य एकाएक बढ़ने के कारण लालाजी की **चाँदी हो गई**।
7. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** – बुद्धि का नाश होना।
   वाक्य – क्या तेरी **अक्ल पर पत्थर पड़ गए** थे जो इतनी ठंड में तालाब में नहाने चला गया ?

(घ) निम्नलिखित अर्थों को प्रकट करने वाली लोकोक्तियाँ लिखिए।

1. झगड़ा दोनों पक्षों से होता है
   लोकोक्ति – **एक हाथ से ताली नहीं बजती**
2. सभी का समान होना
   लोकोक्ति – **एक ही थैली के चट्टे-बट्टे**
3. दोहरा लाभ होना
   लोकोक्ति – **आम के आम गुठलियों के दाम**
4. केवल बाहरी दिखावा
   लोकोक्ति – **ऊँची दुकान फीका पकवान**
5. अवसर का लाभ उठाना
   लोकोक्ति – **बहती गंगा में हाथ धोना**
6. आवश्यकतानुसार चीज न होना
   लोकोक्ति – **ऊँट के मुँह में जीरा**

21. अलंकार

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. अलंकार किसे कहते हैं? अलंकार के भेदों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– "कविता का सौंदर्य बढ़ाने के लिए शब्दों या अर्थों के माध्यम से जो चमत्कार उत्पन्न होता है, उसे अलंकार कहते हैं।"

अलंकार के भेद– भाषा में शब्द और अर्थ दो ही मुख्य तत्व होते हैं, इसलिए इन दोनों के आधार पर अलंकार भी निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं–

1. शब्दालंकार– जहाँ विशिष्ट शब्दों में प्रयोग के कारण चमत्कार अथवा सौंदर्य आ जाए, वहाँ शब्दालंकार होता है; जैसे– 'छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की' यहाँ 'ट' वर्ण की आवृत्ति के कारण शब्द के स्तर पर सौंदर्य या चमत्कार आ गया है।

2. अर्थालंकार– जहाँ अर्थ की विशिष्टता के कारण सौंदर्य या चमत्कार आया हो, वहाँ अर्थालंकार होता है; जैसे– 'हाय फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।'

यहाँ 'बच्ची' की तुलना 'फूल' से की गई है। अत: अर्थ के स्तर पर सौंदर्य आ गया है।

प्रश्न 2. अनुप्रास अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर - किसी वर्ण की बार-बार आवृत्ति होने पर अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण– (क) "रघुपति राघव राजा राम।" ('र' वर्ण की आवृत्ति)

(ख)"कूके लगी कोइलें कदंबन पै बैठि केरि।"

यहाँ 'क' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है, अत: अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 3. उपमा तथा रूपक अलंकार में क्या भिन्नता हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - **उपमा तथा रूपक अलंकार में भिन्नता–** उपमा अलंकार में जहाँ एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाए, वहाँ 'उपमा अलंकार' होता है। रूपक अलंकार में जहाँ एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से न करके उसे दूसरी वस्तु का रूप दे दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उपमा अलंकार का उदाहरण है–

'हाय फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।'

यहाँ कोमल बच्ची की तुलना फूल से की गई है।

रूपक अलंकार का उदाहरण है–

"चरण कमल बंदौ हरि राई।"

यहाँ चरण और कमल में परस्पर अभेद है, अत: होगा चरण रूपी कमल।

अत: यहाँ रूपक अलंकार है।

प्रश्न 4. अतिशयोक्ति अलंकार क्या है? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर– जहाँ किसी वस्तु या बात का बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाए, वहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है।
उदाहरण– "हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।

लंका सारी जल गई, गए निशाचर भाग।।"

यहाँ हनुमान की पूँछ की आग से लंका जलने और राक्षसों के भागने का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है।

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए–

1. मैया मेरी मैं नहीं माखन खायो।	**अनुप्रास अलंकार**
2. काजल की रेख सी कतार है खजूर की।	**उपमा अलंकार**
3. पायो जी मैनें राम रतन धन पायो।	**रूपक अलंकार**
4. काली घटा का घमंड घटा।	**यमक अलंकार**
5. बाँध दो कसकर कमर पर ढाल मेरी।	**अनुप्रास अलंकार**

22. अपठित

अभ्यास

अपठित अंश

1. आधुनिक.....आवश्यकता है।

प्रश्न 1. आज का युग कैसा युग है?

उत्तर - आज का युग वैज्ञानिक युग है।

प्रश्न 2. हमें आज की पीढ़ी में कैसी भावना विकसित करनी चाहिए?

उत्तर - हमें आज की पीढ़ी में ऐसी भावना विकसित करनी चाहिए कि जिससे मानव द्वारा विज्ञान की शक्ति का दुरुपयोग न हो सके।

प्रश्न 3. हमें विज्ञान की शक्ति का क्या करना चाहिए?

उत्तर - हमें विज्ञान की शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए।

प्रश्न 4. उपर्युक्त अपठित अंश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर - वैज्ञानिक युग।

2. हवा.....चाहिए।

प्रश्न 1. हवा और पानी के बाद मनुष्य की तीसरी आवश्यकता क्या है?

उत्तर – हवा और पानी के बाद मनुष्य की तीसरी आवश्यकता भोजन है।

प्रश्न 2. भोजन प्राप्त करने का क्या ध्येय है?

उत्तर – भोजन प्राप्त करने का ध्येय यही है कि हमें शक्ति मिले, जिससे हम कार्य कर सकें।

प्रश्न 3. इस अपठित अंश का सारांश लिखिए।

उत्तर – भोजन हमारी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। भोजन से ही मनुष्य को कार्य करने के लिए शक्ति प्राप्त होती है। जिस प्रकार इंजन को चलाने के लिए उसमें कोयला डालना पड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य को गतिमान करने के लिए भोजन का प्रयोग करना पड़ता है। भोजन खाने से ही हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। इसलिए शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भोजन हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है।

प्रश्न 4. इस अपठित अंश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर – भोजन।

प्रश्न 5. काले मोटे अक्षरों में छपें अंशो का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर – **मनुष्य को गतिमान करने के लिए–** व्यक्ति को क्रियाशील करने के लिए ।
संतुलित खाद्य– संपूर्ण पोषक तत्व।

3. कुछ काम .....मन को।

प्रश्न 1. इस अपठित अंश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर – जीवन की सार्थकता।

प्रश्न 2. अपठित अंश का सारांश लिखिए।

उत्तर – इस गद्यांश में कवि कहता है कि हे मनुष्य इस संसार में अपना नाम कमाने के लिए कुछ न कुछ अच्छे कार्य करते रहो जिससे कि तुम्हारा नाम इस संसार में हमेशा रहे। कवि आगे कहता है कि हे मनुष्य भगवान ने तुझे इस पृथ्वी पर जन्म दिया है। उसका मतलब समझो और बेकार की बातों में अपना समय नष्ट न करो। इस शरीर से ऐसे काम करो, जिससे कि यह संसार तुम्हें हमेशा याद रखे । हे मानव तू अपने मन की निराशा को छोड़ और अपने इस जीवन को सद्कार्यों में लगा दें।

प्रश्न 3. सोचकर लिखिए कि हमारा जन्म किस लिए हुआ है?

उत्तर – हमारा जन्म संसार में रहकर अच्छे काम करने के लिए हुआ है।

प्रश्न 4. हमारा जन्म व्यर्थ कैसे हो सकता है?

उत्तर– बेकार की बातों में अपना समय व्यतीत करके हमारा जन्म व्यर्थ हो सकता है।

4. चाह नहीं.....अनेक।

प्रश्न 1. इस अपठित अंश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर – पुष्प की अभिलाषा।

प्रश्न 2. अपठित अंश का सारांश लिखिए।

उत्तर – इन पंक्तियों में कवि पुष्प का वर्णन करते हुए कहता है कि पुष्प यह नहीं चाहता कि वह किसी सुंदर स्त्री के गहनों के रूप में गूँथा जाए और उसकी यह भी इच्छा नहीं है कि किसी प्रेमी के गले की माला के रूप में सजे। वह यह भी नहीं चाहता कि राजाओं के शव पर उसे डाला जाए और उसकी यह भी इच्छा नहीं है कि देवताओं के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य पर इतराए । हे! वन के माली मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक देना जहाँ मातृभूमि की रक्षा के लिए वीर पुरुष अपने शीश चढानें जा रहे हों।

प्रश्न 4. फूलों का उपयोग आमतौर पर किन कामों के लिए किया जाता है?

उत्तर – फूलों का उपयोग आमतौर पर सुख और दुख दोनों अवसरों पर किया जाता है।

प्रश्न 3. इस कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर – इस कविता से हमें अपने आप को मातृभूमि पर बलिदान करने की प्रेरणा मिलती है।

खंड–2 रचना

23. अनुच्छेद लेखन

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर 100 से 150 शब्दों का अनुच्छेद लिखिए–

उत्तर –

1.समाचार पत्र

"खींचो न कमानों को, तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो॥"

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए वह समाज से जुड़ा रहना चाहता है। समाज में घटित घटनाओं की जानकारी पाने के लिए वह सदा उत्सुक रहता है। वह प्राचीन समय से लेकर वर्तमान युग तक समाचार प्राप्त करने के लिए नए-नए साधन खोजता रहा है। वर्तमान समय में केवल अपने आस-पास ही नहीं, अपितु विश्व में घटित घटनाओं की जानकारी रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। समाचारपत्र हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। जिस दिन सुबह की चाय के साथ समाचारपत्र दिखाई न दे, तो अजीब-सा खालीपन और बेचैनी का अहसास होता है।

सबसे पहला समाचारपत्र चीन में प्रकाशित किया गया था। आज तो न जाने कितने ही समाचार–पत्र प्रकाशित किए जाते हैं। समाचारपत्र अनेक प्रकार के होते हैं–दैनिक, सांध्य, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक आदि।

वर्तमान युग में समाचार–पत्र बहुत अहम भूमिका निभा रहे हैं। आजकल राजनैतिक दल समाचारपत्रों के माध्यम से अपनी नीतियों का प्रचार भी करते हैं।

समाचारपत्रों को समाज के हित में कार्य करना चाहिए। किसी समाचार को बढ़ा-चढ़ाकर लिखने की बजाय केवल सत्य ही छापना चाहिए। याद रहे कि समाचारपत्रों में छपे समाचारों से जनता बहुत जल्दी प्रभावित होती है।

2. मेरा अनोखा स्वप्न

कमरे के बाहर देख रही हूँ, पर्वतों की एक लंबी शृंखला है पर्वतों का रंग रह-रहकर बदल जाता है, जहाँ छाया पड़ रही है, वहाँ पर्वत गहरे काले हो जाते हैं, जहाँ धूप पड़ रही है वहाँ पेड़ो की हरियाली से हरे-भरे दिखाई देते हैं। दूर सामने बहुत तेज धूप है, वहाँ पर्वतों के शिखर सफेद हैं, वे बर्फीले पर्वत हैं। सामने के पर्वतों की ओर इंदिरा गाँधी अस्पताल है। वह भी यहाँ से नीचे दिखाई देता है। ऊपर से बादल तैरते हुए निकल जाते हैं। अचानक नीचे बाजार की ओर देखकर दंग रह जाती हूँ। वहाँ से दूध मे नहाए सफेद बादल उमड़-घुमड़कर ऊपर उठते दिखाई देते हैं। आज तक बादलों को अपने से ऊपर ही देखा था। आज बादल नीचे हैं और मैं ऊपर और बादल हैं कहाँ। जोर से चिल्लाकर माँ और दादी को पुकारती हूँ। वे दौड़ी आती हैं। उन्हें बादल दिखाती हूँ, तो वे भी दंग रह जाती हैं।

हम तीनों कमरा बंद करके जल्दी-जल्दी नीचे आती हैं। चारों ओर आगे बादल ही बादल हैं। मैं दोनों हाथ फैलाकर बादलों को बाँहों में भर लेना चाहती हूँ। कैसा अद्‌भुत दृश्य है, उछलकर बादलों को पकड़ने का प्रयास करती हूँ। ये हवा के रथ पर सवार होकर भागते जाते हैं। यह बादल इसी प्रकार मंडराते रहें। यह जीवन इसी प्रकार आनंद में डूबा रहे। काश! ऐसा ही होता।

मैं ऐसा सोचने लगी, लेकिन तभी मेरी माँ ने मुझे हिलाकर उठाया और जब मैनें आँखें खोली तो देखती हूँ सामने कुछ भी नहीं है वह सब बादल कहाँ गए, तो क्या मैं सपना देख रही थी यह कैसा अनोखा सपना था?

3. जीवन और स्वास्थ्य

आज की भागदौड़ से भरी जिंदगी ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर दिया है कि वह यह भी भूल गया है कि इस सारी भागदौड़ का वह तभी तक हिस्सेदार है, जब तक उसका शरीर स्वस्थ है। जो व्यक्ति अपने शरीर की अपेक्षा करता है, समझ लीजिए कि वह अपने लिए रोग, बुढ़ापा और मृत्यु के दरवाजे खोलता है। आज के समाज में जो भयानक रोग तथा महामारियाँ दिखाई देती हैं उनका एक प्रमुख कारण व्यक्ति का अपने स्वास्थ्य के प्रति ध्यान न देना भी है।

एक कहावत भी है कि **स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन तथा आत्मा का निवास होता है और स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम बहुत आवश्यक है।**

अच्छे स्वास्थ्य के लिए संतुलित भोजन, स्वच्छ जल तथा वायु, संयम तथा नियमित निद्रा सभी कुछ जरूरी है। स्वस्थ मनुष्य ही शारीरिक और मानसिक सभी कार्य सुगमता से कर सकता है। जो व्यक्ति बीमार रहता है, वह न तो शारीरिक श्रम का कार्य कर सकता है। और न ही कोई बौद्‌धिक कार्य । यदि शरीर स्वस्थ रहेगा, तो मन भी प्रसन्न रहेगा और हम हर काम आनंद और स्फूर्ति से कर सकेंगे।

मनुष्य का शरीर भगवान की दी हुई एक अमूल्य निधि है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का यह मुख्य कर्तव्य है कि वह इस शरीर को स्वस्थ रखे।

'शरीर गया तो जीवन गया' शरीर से अर्थ है 'स्वस्थ शरीर'। अत: शारीरिक स्वास्थ्य हमारे संपूर्ण जीवन की आधार शिला है। इसके स्वस्थ न रहने पर जीवन का महल खंडित होने लगता है। इसलिए स्वास्थ्य की महत्ता पर प्राचीन काल से बल दिया गया है। विभिन्न लोकोक्तियों ने यह स्वीकार किया कि–

"जान है तो जहान है।" तथा **"एक तंदुरुस्ती हजार नियामत।"**

4. कलम और तलवार

जो कार्य तलवार, अस्त्र-शस्त्र नहीं कर सकते, कलम पल-भर में कर सकती है। कलम पल-भर में किसी भी मनुष्य का जीवन बना सकती है, तो बिगाड़ भी सकती है। अत: हम कह सकते हैं कि कलम का प्रयोग मानसिक रूप से अधिक किया जाता है। जिससे हम अच्छे-अच्छे साहित्य और कहानियाँ लिखते हैं, जिन्हें लोग पढ़ते हैं और उन्हें इससे कुछ सीखने को मिलता है।

तलवार का प्रयोग शारीरिक रूप से किया जाता है। प्राचीन काल में राजा-महाराजा लोग तलवार का प्रयोग अपनी लड़ाई लड़ने के लिए करते थे। इससे वह अपने शत्रुओं से शरीर की रक्षा करते थे। प्राचीन काल में पक्षियों के पंखो की कलम बनाकर ऋषि-मुनि कथाएँ लिखते थे और वृक्षों की टहनियों व सरकड़ों को काटकर कलम बनाए जाते थे। परन्तु वर्तमान काल ने वैज्ञानिक उपयोग से जीवन को सरल बना दिया है। नए-नए तरीकों से कलम का उपयोग होने लगा है और कलम को अलग-अलग व नए रूप व नाम दिए जाने लगे हैं; जैसे– फाउंटेन पेन, बॉल पेन, पेंसिल आदि।

इनकी कीमत भी एक रुपये से लेकर लाखों रुपये तक की है। इससे किसी भी बड़े से बड़े साहित्य को आसानी से लिखा जा सकता है।

तलवार से लड़ाई तो लड़ी जाती है। परंतु इससे भलाई का काम अधिक नहीं होता।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हमारे लिए कलम मानसिक रूप से व तलवार शारीरिक रूप से उपयोगी है।

5. संगठन की महत्ता

संगठन शब्द का अर्थ है– एक साथ मिलजुल कर रहना या एकता बनाए रखना।

यदि सभी व्यक्ति मिलजुल कर संगठित होकर रहते हैं, तो सभी कार्य सुगमतापूर्वक हो जाते हैं और अगर आपस में लड़कर वह कार्य को करेंगे, तो वह काम ही बिगड़ जाता है। एक काम को अगर एक अकेला व्यक्ति चार या पाँच घंटों में करता है, यदि उसी काम को चार या पाँच व्यक्ति मिलकर करेंगे, तो वह काम कुछ ही घंटों में हो जाता है। इसलिए संगठित होकर रहने में ही शक्ति है।

इसी प्रकार अलग-अलग धर्मों में यह बात देखने को मिलती है। लेकिन वह यह नहीं सोचते कि अलग-अलग जातियाँ होते हुए भी उनमें आत्मा एक है और भगवान एक ही है। फिर भी एक-दूसरे को

भला-बुरा कहते हैं। इसी ऊँच-नीच की भावना के कारण ही आपस में झगड़े होते हैं। इन झगड़ों में उन व्यक्तियों की बलि चढ़ती है, जो निर्दोष होते हैं। अगर ये लोग एक हो जाएँ और एक होकर कार्य करें तो वह काम जरूर होगा, चाहे उस कार्य को करते समय कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े।

यक्ति में अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने की योग्यता होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कार्य को करने के लिए किसी भी सर्वोत्तम व्यक्ति का चुनाव करना चाहिए, जो वास्तव में कार्य करने में रूचि रखता हो। किसी भी कार्य को करने से पहले हमें एक रूपरेखा बना लेनी चाहिए और सभी व्यक्तियों को काम बराबर-बराबर बाँट देना चाहिए। जिससे निश्चित रूप से वह काम को जल्दी-जल्दी करेंगे और सभी व्यक्ति इस प्रकार संगठित होकर रहेंगे।

इस प्रकार अगर देशों में भी संगठन होगा। तो देश केवल शांति का ही नहीं बल्कि, शक्ति का स्रोत होगा। क्योंकि विश्व में जो देश आज शक्ति संपन्न हैं, वे ही पूज्य माने जाते हैं।

इस प्रकार यदि सभी लोगों में संगठन की भावना का विकास होगा, तो सभी व्यक्ति अपना जीवन शांतिपूर्वक बितायेंगे।

24. पत्र लेखन

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखने का प्रयास कीजिए–

उत्तर - **1. पिकनिक का वर्णन करते हुए मित्र को एक पत्र लिखिए।**

बी–401, गोमती नगर
लखनऊ।
दिनांक – 19.1.20..

प्रिय मयंक,

नमस्ते।

कई दिनों से तुम्हें पत्र नहीं लिख सका, न ही तुम्हारा कोई पत्र आया । आशा है परिवार में सभी सकुशल होगें। पिछले सप्ताह मैं कक्षा के सभी छात्रों के साथ पिकनिक मनाने के लिए तिलियार झील गया था। हम लोग सुबह सात बजे ही बस से निकल पड़े थे। बसंत ऋतु थी। झील के चारों ओर हरे-भरे वृक्ष थे। अनेक प्रकार के फूल खिलें हुए थे। झील का जल अत्यंत स्वच्छ था। आकाश में कुछ बादल थें। जिनके पीछे से सूर्य झाँक रहा था। शीतल मंद और सुगंधित हवा बह रही थी।

वहाँ झील के पास बैठकर हम लोगों ने हल्का नाश्ता लिया। फिर सभी छात्र छोटी-छोटी टुकड़ियों में बट गए। कुछ घूमने के लिए निकले, कुछ खेलने लगे तथा कुछ छात्र नौका-विहार के लिए तैयार हुए। कुछ देर बाद हम लोगों ने वहाँ बैठकर खाना खाया। तत्पश्चात छात्रों ने चुटकुले तथा गीत आदि सुनाए। पाँच बजे हम

वहाँ से वापस चल पड़े। पिकनिक का यह कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा। काश! तुम भी साथ होते तो कितना मजा आता।

तुम्हारा स्नेही
विशाल

2. परीक्षा में असफल अपनी छोटी बहन को सांत्वना पत्र लिखिए।

408/1, सिविल लाइन
मुजफ्फरनगर।
दिनांक 20.1.20..
प्रिय बहन मनीषा,
मधुर स्मृति।

मनीषा मुझे कल तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर मालूम हुआ कि इस बार की परीक्षा में तुम सफलता प्राप्त नहीं कर सकी। अत्यंत दु:ख हुआ।

प्रिय, बहन तुमनें पूरे वर्ष बहुत परिश्रम किया था, अपनी पढ़ाई बहुत मन लगाकर की। तुम्हारे परिश्रम को देखकर कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता था कि तुम्हें असफलता का मुँह देखना पड़ेगा। जीवन केवल फूलों की शय्या ही नहीं। इसमें काँटे भी होते हैं। हमें सुख-दुख, सफलता-असफलता से अपने मन को समान रखना चाहिए। कर्म करना हमारा कर्तव्य है, फल तो भगवान के हाथ में है।

परीक्षा में असफल होने का दु:ख तो अवश्य होता है, किंतु तुम अभी से परिश्रम करो। अगले वर्ष पूरे विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करोगे। मेरे योग्य कोई सेवा हो तो लिखना, न भूलना।

तुम्हारी बहन
कविता

3. साइकिल चोरी की सूचना देने के लिए अपने क्षेत्र के पुलिस अधिकारी को पत्र लिखिए।

सेवा में,
पुलिस अधिकारी महोदय,
करोल बाग,
दिल्ली।
विषय– साइकिल चोरी होने की सूचना
महोदय,

निवेदन यह है कि कल दोपहर के लगभग 3.00 बजे करोल बाग के बाजार में मेरी साइकिल चोरी हो गई है। मैं बाजार में दुकान नं0 1525 के अंदर घर के लिए जरूरी सामान लेने गया था। जब सामान लेकर बाहर आया, तो साइकिल गायब थी। मैनें आसपास के दुकानदारों से पूछा और आसपास तलाश की। परंतु साइकिल का कुछ पता न चला।

मेरी साइकिल एटलस कंपनी की थी। उसकी ऊँचाई 22 इंच की तथा रंग काला था। टोकरी, घंटी और कैरियर भी लगा हुआ था। और उसका ताला भी बंद था। चेन कवर पर मेरा नाम अंकित लिखा हुआ है। साइकिल नं0 था 11200 मैनें इसे कमला नगर के बाजार से खरीदा था।

रिपोर्ट के साथ साइकिल खरीद की रसीद भी संलग्न है।
महोदय, आपसे निवेदन है कि इस सूचना के आधार पर एक एफ.आई.आर. दर्ज करें तथा शीघ्र से शीघ्र साइकिल ढूँढ़वाने की कृपा करें।
सधन्यवाद।

भवदीय
अंकित गुप्ता
134 करोल बाग, दिल्ली।

4. अपने प्रधानाचार्य को बहन के विवाह पर चार दिनों के अवकाश लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय,
सोफिया पब्लिक स्कूल,
मेरठ।
महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 'आठवी' की छात्रा नेहा हूँ। मेरी बहन का विवाह 25 जनवरी को होना निश्चित हुआ है। विवाह समारोह लखनऊ में संपन्न होगा। अन्य रस्में भी वहीं निभाई जाएँगी। कल प्रात: ही हमें वहाँ के लिए रवाना होना है। अत: आपसे अनुरोध है कि मुझे दिनांक 23 जनवरी से 26 जनवरी तक चार दिन का अवकाश स्वीकृत करने की कृपा करें। मैं इसके लिए आपकी आभारी रहूँगी।
धन्यवाद,

आपकी आज्ञाकारी छात्रा
नेहा

25. निबंध लेखन

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखने का प्रयास कीजिए–

1. परोपकार
2. अच्छा स्वास्थ्य–महावरदान
3. विज्ञान की देन
4. पर्यावरण और प्रदूषण
5. आदर्श विद्यार्थी
6. रेल यात्रा
7. पुस्तकालय
8. आत्मनिर्भरता

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।